नवभारत

महाराष्ट्र के गौरव

संघर्ष और सफलता की दास्तान

नवभारत

संस्थापक : **स्व. श्री रामगोपाल माहेश्वरी**

एडिटर इन चीफ : **निमिष माहेश्वरी**

निदेशक : **वैभव माहेश्वरी**

मुख्य परिचालन अधिकारी : **श्रीनिवास राव**

लेखन व संपादन : **रजनीकांत त्रिपाठी, सूर्यप्रकाश मिश्र, सुधीर देशमुख**

मुखपृष्ठ : **जयेंद्र कांबले**

कला, साजसज्जा एवं इन्फो ग्राफिक्स : **सचिन मोरे, एस . रश्मि के ., नीरज मुल्हेरकर, महेंद्र माने**

परियोजना टीम : **स्टीवन सिंह, हेमंत कुलकर्णी, औदुंबर धनवट, राहुल अभ्यंकर, प्रशांत वाघ, राजाराम पिटला, ध्रुवज्योति रॉय, मनोज कुमार**

प्रकाशक : **नवभारत प्रेस लि .**

नवभारत भवन, प्लॉट नं . 13, सेक्टर-8, सानपाड़ा (पूर्व),
नवी मुंबई - 400705 . मुंबई कार्यालय - 189-ए, आनंद कॉम्प्लेक्स,
एस .जी . मार्ग, चिंचपोकली, मुंबई - 4000011

022-49642309, 022-46160894

www.navbharatlive.com

@ सर्वाधिकार सुरक्षित

बहु असोत सुंदर संपन्न की महा
प्रिय अमुचा एक महाराष्ट्र देश हा

महाराष्ट्र — प्रतिभा, पराक्रम और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक. यह भूमि वीरता और भक्ति की परंपराओं से परिपूर्ण है, जहां कवियों की काव्यरचनाएं और लोकनाट्य जीवन को रंगीन बनाते हैं. फूलों की घाटियां, उंची पहाड़ियां और उर्वर मैदान यहां के प्राकृतिक वैभव का उदाहरण हैं, जबकि यहां के लोग आत्मविश्वासी, दयालु और परिश्रमी हैं. महाराष्ट्र ने इतिहास में अनेक महान हस्तियों को जन्म दिया है और आज भी अपनी गौरवशाली विरासत, दृढ़ संकल्प और सामाजिक सद्भाव के माध्यम से राष्ट्र को प्रेरित करता है.

गौरवशाली इतिहास

महाराष्ट्र केवल एक क्षेत्र या सूबा नहीं है बल्कि यह शताब्दियों से लोगों के सम्मिलित प्रयास से बना एक गौरवशाली विरासतवाला राज्य है. यह महान मराठा योद्धाओं की मातृभूमि है. इस क्षेत्र पर शताब्दियों तक शासन करने वाले मराठाओं के कारण इसकी विरासत एवं संस्कृति काफी समृद्ध है. महान योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे महान राजाओं के कारण महाराष्ट्र को बड़े सम्मान के साथ देखा जाता है.

राज्य की समृद्ध संस्कृति एवं कला के पीछे यहां के लोगों की अपनी बहुरंगी कला, एवं विरासत को अक्षुण्य बनाए रखने के लिए शताब्दियों तक प्रयत्नशील बने रहना है. हाल के दशकों में भारी औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण के बावजूद राज्य में कई स्थान ऐसे हैं, जहां परम्परागत पेशा, कला एवं क्राफ्ट संरक्षित हैं.

प्रतिभा एवं कुछ कर गुजरने की भावना से भरी यह भूमि अनेक महान नेताओं, स्वतंत्रता सेनानियों, व्यवसायियों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों, शिक्षकों, चिकित्सकों एवं अभिनेताओं की कर्मस्थली या जन्मस्थली रही है. इस राज्य ने खेल, कला, साहित्य तथा समाजसेवा के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान दिया है. यहां अध्यात्मिक गुरुओं एवं संतों की भी कमी नहीं रही है. इन महान विभुतियों ने अपनी तपस्या एवं शिक्षा से विश्व को एक नयी दिशा दी है.

सदियों पूर्व धार्मिक गुरुओं एवं उनके अनुयायियों द्वारा निर्मित अजंता, एलोरा एवं एलिफेंटा की गुफाएं एवं उनके भित्तिचित्र आज भी शान्ति एवं त्याग का संदेश देते हैं. पारसी एवं मुस्लिम जैसे कई समुदाय के लोगों ने कुछ सदी पूर्व महाराष्ट्र को अपना आशियाना बनाया और तब से लेकर महाराष्ट्र ने खुद को एक कॉस्मोपोलिटन राज्य के रूप में स्थापित किया है. यह राज्य लगातार प्रगति और सभी की खुशहाली के लिए जाना जाता है. महाराष्ट्र ने देश की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रगति में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है.

संभावनाओं की भूमि

महाराष्ट्र राज्य की स्थापना 1 मई 1960 को हुई. गत 66 वर्षों में लगभग सभी क्षेत्रों में इसकी उल्लेखनीय प्रगति काबिले तारीफ है. सरकार की नीतियां, उद्यमियों व विचारकों की दूरदर्शिता तथा यहां के लोगों के परिश्रम ने मिलकर जो काम किया है, उसका नतीजा है कि आज यह देश का एक अति स्वच्छ, समृद्ध, सुन्दर, उदार एवं समावेशी राज्य माना जाता है. राज्य का हर हिस्सा प्रगति की शानदार तस्वीर पेश करता है. चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या चिकित्सा का क्षेत्र, कृषि हो या उद्यम, सांस्कृतिक विरासत हो या भाई-चारा महाराष्ट्र हर क्षेत्र में अगुआई करता दिखाई देता है.

अधिकांश अवधि में यहां की प्रगति की दर देश के औसत से काफी अच्छी रही है. आगे भी इस गति के बने रहने की उम्मीद है. 15 प्रतिशत के योगदान के साथ देश के जीडीपी में अहम योगदान देनेवाला यह राज्य देश के आर्थिक विकास में अग्रणी रहा है. कुल एफडीआई अंतर्प्रवाह में 30 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ यह निवेशकों की पहली पसंद रहा है. उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में महाराष्ट्र की अग्रणी भूमिका, सामाजिक पुनर्रचना में उल्लेखनीय उपलब्धि, फाइन आर्ट्स की गौरवशाली विरासत तथा समावेशिता न केवल इसे अग्रणी स्थान प्रदान करते हैं, बल्कि अन्य राज्यों के लिए रोल मॉडल भी हैं. अपनी समृद्ध सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध महाराष्ट्र सदैव ही लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहा है. औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण के बावजूद इसने अपने परम्परागत पेशा, संस्कृति, कला एवं हस्तकला को नहीं छोड़ा है. समावेशी एवं विकासोन्मुख नीतियों ने यहां हर एक के लिए असीम संभावनाऐं पैदा की है.

अरबियन समुद्र के तट पर स्थित महाराष्ट्र भारत के पश्चिमी एवं मध्यभाग को कवर करता है. इसके पास 720 कि.मी. का लंबा समुद्र तट, पश्चिम में सह्याद्री पर्वतमाला, उत्तर में सतपुड़ा की पहाडियां हैं. पूर्व में भैरवगढ़-गढ़चिरोली-गायखुरी श्रृंखलाएं इसे प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण राज्य बनाती हैं. महाराष्ट्र अपनी ट्रॉपिकल मानसून जलवायु के कारण लंबे समय तक हरियाली से आच्छादित रहता है. मानसून एवं तीव्र औद्योगिकीकरण दो प्रमुख कारण हैं, जो इसकी सतत् वृद्धि एवं समृद्धता सुनिश्चित करते हैं.

यदि जनसंख्या के हिसाब से देखें तो यह दूसरा सबसे बड़ा राज्य है, जो 3.09 लाख वर्ग कि.मी. में फैला है. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इसकी कुल आबादी 11.24 करोड़ है जो भारत की आबादी का 9.3 प्रतिशत है. यह सबसे अधिक शहरीकरण वाला राज्य है जिसकी 45.2 प्रतिशत आबादी शहरी क्षेत्र में रहती है. महाराष्ट्र में कुल 36 जिले हैं, जो प्रशासनिक दृष्टि और जिले स्तर पर प्रभावी नियोजन के लिए कोंकण, पुणे, नाशिक, औरंगाबाद, अमरावती तथा नागपुर इन 6 राजस्व विभागों में बंटे हैं.

ग्रामीण क्षेत्र में स्थानीय स्वराज्य के लिए 34 जिला परिषदों, 35 पंचायत समितियां और 27,920 ग्राम पंचायतें हैं. शहरी क्षेत्र के प्रशासन के लिए 26 नगर निगम, 230 नगर परिषद, 110 नगर पंचायत और 7 कैंटोनमेंट बोर्ड हैं.

महाराष्ट्र के मुख्य शहर मुंबई, पुणे, ठाणे, नागपुर, नाशिक, औरंगाबाद, सोलापुर, अमरावती एवं कोल्हापुर है. मुंबई महाराष्ट्र की राजधानी एवं देश की वित्तीय राजधानी है. मुंबई में न केवल देश बल्कि विदेश के बड़े औद्योगिक घरानों, कंपनियों, वित्तीय कंपनियों के मुख्यालय हैं.

भारत का प्रमुख स्टॉक एक्स्चेंज व पूंजीबाजार तथा कॉमोडिटी एक्स्चेंज मुंबई में स्थित है. एक वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में भारत को उभारने मे मुंबई से काफी मदद मिली है और यह बड़ी से बड़ी विदेशी कंपनियों को आकर्षित करने में सफल रही है. महाराष्ट्र में 234 लाख हेक्टेयर भूमि पर खेती होती है और इसके पास 52.1 लाख हेक्टेयर वन भूमि है. महाराष्ट्र सरकार ने सिंचाई क्षेत्र में सुधार के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं. गैर सिंचित क्षेत्रों में वाटर शेड डेवलपमेंट प्रोग्राम शुरू करके भूमि एवं जल संरक्षण को तेज करने का प्रयास किया गया है. जलयुक्त शिवार अभियान उसी का एक हिस्सा है. यहां पशुपालन एक महत्त्वपूर्ण कृषि से जुड़ी गतिविधि है. देश में कुल पशुधन के मामले में महाराष्ट्र का हिस्सा 6.39 प्रतिशत और पोल्ट्री संख्या में 10.7 प्रतिशत है.

महाराष्ट्र देश का एक अति औद्योगिककृत राज्य है. यह लघु उद्योगों का जनक रहा है और घरेलू से लेकर विदेशी निवेशकों, संस्थाओं एवं कंपनियों के निवेश के आकर्षण का केन्द्र रहा है. निवेशक आज भी यहां निवेश करने के लिए लालायित रहते हैं. यह एक प्रमुख आईटी ग्रोथ सेंटर माना जाता है. राज्य ने प्राथमिक शिक्षा को महत्व दिया है, जिसके कारण यहां की साक्षरता दर लगातार सुधर रही है.

असीमित अवसर

महाराष्ट्र को असीम संभावनाओं का राज्य कहा जाता है और यहां सबके लिए विकास के अवसर मौजूद हैं. पर्वतमालाओं से घिरा यह राज्य, अरबियन समुद्र के कारण शताब्दियों की गौरवशाली गाथा, बायोडाइवर्सिटी से समृद्ध पश्चिमी घाट, मानसूनी जलवायू इसे न केवल प्राकृतिक सुन्दरता एवं विविधता प्रदान करते हैं बल्कि इसे एक उत्पादक राज्य भी बनाते हैं.

कृषि राज्य की मुख्य आजीविका का साधन रही है. यहां आम, अंगूर, केला, संतरा, गेहूं, चावल, ज्वार, बाजरा, हल्दी एवं तम्बाकू जैसी नकदी फसलें भी उगाई जाती हैं. आज महाबलेश्वर स्ट्राबेरी, नागपुर संतरा, नाशिक अंगूर, तथा कोल्हापुर गुड़ राज्य के पंजीकृत जिओग्राफिक इंडिकेशन्स (जीआई) हैं.

लोग एवं जीवनशैली

महाराष्ट्र में रहने वाले लोगों को महाराष्ट्रीयन कहा जाता है. यहां विभिन्न संस्कृति, परम्परा एवं धर्म के लोग रहते हैं. लोग अलग-अलग कर्म एवं सम्प्रदाय को मानने वाले क्यों न हो, लेकिन उनका आपसी भाईचारा, सौहार्द आतिथ्य एवं सुस्वागत करनेवाला स्वभाव काबिले तारीफ है. शहरी क्षेत्र को छोड़कर महाराष्ट्र के डेक्कन पठार में भील, महादेव, कोली, गोंड एवं वार्लिस (वार्ली पेंटिंग के लिए प्रसिद्ध) जैसी आदिवासी समुदाय के लोग रहते हैं.

उनकी वन में रहने की परम्परा अभी भी आधुनिकता से अछूती है. वे अपने ढंग की जिन्दगी जीते हैं, और अपनी परम्पराओं का पालन कर रहे हैं.

महाराष्ट्र विश्व के प्रमुख धर्मों-हिन्दू, बौद्ध, सिख, जैन, इस्लाम का घर है. हालांकि महाराष्ट्र की ८० प्रतिशत आबादी हिन्दू है, लेकिन राज्य में धर्मिनरपेक्षता की भावना होने से सभी धर्म के लोग मिल-जुलकर शांतिप्रेम रूप से रहते हैं. हिन्दू गणेशजी और विट्ठल के रूप में भगवान कृष्ण की पूजा करते हैं. महाराष्ट्र में मुस्लिम आबादी १० प्रतिशत हैं. अन्य प्रमुख धर्मों में जैन, ईसाई, बौद्ध, जोरोस्ट्रियन (फारसी, ईरानी एवं ज्यूज) भी शामिल हैं.

साक्षरता एवं कनेक्टिविटी

वर्ष २०११ की जनगणना के अनुसार महाराष्ट्र की साक्षरता दर ८२.३ प्रतिशत है, जबकि देश का औसत ७३ प्रतिशत है. १२ वीं तक की छात्राओं को मुफ्त शिक्षा दी जाती है. इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं मैनेजमेंट के लिए यहां उच्च दर्जे के हायर एज्युकेशनल इंस्टिट्यूट्स मौजूद हैं. मानव विकास रिपोर्ट २०११ के अनुसार भारत का मानव विकास सूचकांक ०.४६७ है जबकि महाराष्ट्र गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है. महाराष्ट्र में सिम्बियोसिस, इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस, जेवियर्स इंस्टिट्यूट ऑफ कम्युनिकेशन, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी, मिठीबाई कॉलेज, सोफिया कॉलेज आदि कुछ प्रसिद्ध नाम शामिल हैं.

राज्य के २.९९ लाख कि.मी. का सुगम सड़क नेटवर्क है. सर्व मौसम सड़कों एवं फेयर मौसम सड़कों से लगभग ९९ प्रतिशत अच्छी तरह से जुड़े हैं. समुद्री बंदरगाहों एवं हवाई अड्डों से अच्छा जुड़ाव एवं बेहतर भूतल परिवहन सुविधा के चलते महाराष्ट्र को उत्कृष्ट परिवहन व्यवस्था के लिए जाना जाता है.

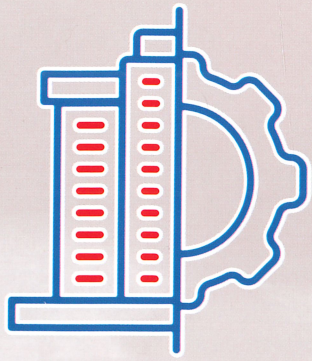

सुविकसित इन्फ्रास्ट्रक्चर

महाराष्ट्र के पास एक सुविकसित सामाजिक भौतिक एवं औद्योगिक बुनियादी ढांचा है. 4 अंतर्राष्ट्रीय एवं 8 घरेलू हवाई अड्डों के अलावा 2 बड़े और 53 छोटे पोर्ट हैं. 62,000 किमी से अधिक रेल नेटवर्क और इसके पास एक सुविकसित पावर सप्लाई ग्रिड भी है. यह 18 राष्ट्रीय राजमार्गों के जरिए 6 पड़ोसी राज्यों एवं देश के अन्य भाग से अच्छी तरह कनेक्टेड है. राज्य के पास कुशल एवं औद्योगिक मजदुरों का बड़ा बल है, जो इसे सेवा एवं मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र के लिए एक आदर्श स्थल बनाता है. राज्य में कई विशिष्ट एवं विशेषज्ञ संस्थाएं मौजूद हैं, जो उद्योग की जरूरत के अनुरुप कुशल मानवबल तैयार करती हैं. राज्य में कई अंतर्राष्ट्रीय दर्जे के अस्पताल मौजूद हैं, जो देश ही नहीं, बल्कि अन्य देश के मरीजों को विश्वस्तरीय इलाज उपलब्ध कराते हैं.

प्रमुख क्षेत्र

महाराष्ट्र का देश के कुल ऑटो उत्पादन में हिस्सा 23 प्रतिशत से उपर है. पुणे अग्रणी ऑटो हब बनकर उभरा है. नाशिक, औरंगाबाद और नागपुर अन्य हब के रूप में विकसित किए जा रहे हैं. महाराष्ट्र में 8 सेंटर को इलेक्ट्रॉनिक हब के रूप में अधिसूचित किया गया है. जिसमें मुंबई, नागपुर, पुणे, नाशिक, नवी मुंबई, अहमदनगर, ठाणे एवं औरंगाबाद शामिल है. फार्मास्युटिकल क्षेत्र में महाराष्ट्र 23 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ दवा उत्पादन में अग्रणी स्थान रखता है. मुंबई, पुणे, ठाणे, नाशिक, एवं औरंगाबाद प्रमुख दवा उत्पादक केन्द्र है. मुंबई, औरंगाबाद, नांदेड एवं कोल्हापुर प्रमुख जेम्स एंड ज्वेलरी हब बनकर उभरे हैं. डिफेंस हब के रूप में मुंबई, नागपुर, पुणे, नाशिक एवं औरंगाबाद का विकास किया जा रहा है.

बुनियादी सुविधाओं का तेजी से विकास

बुनियादी सुविधाओं के निर्माण में तेजी से काम चल रहा है. हिन्दुहृदयसम्राट बालासाहेब ठाकरे महाराष्ट्र समृद्धि महामार्ग लगभग खुल गया है. समृद्धि की तरह ही राज्य सरकार ने नागपुर-गोवा शक्तिपीठ महामार्ग का काम हाथ में लिया है. इस महामार्ग से विदर्भ, मराठवाडा, पश्चिमी महाराष्ट्र और कोंकण के १२ जिलों को जोड़ा जाएगा. ७५००० करोड़ रुपये के खर्च से बनने वाले इस महामार्ग से नागपुर और गोवा के बीच की ७६० कि.मी. की दूरी ८ घंटें में पूरी की जा सकेगी. इसके साथ ही एमएसआरडीसी पुणे-नाशिक औद्योगिक एक्सप्रेस हाइवे, विरार-अलीबाग बहुउद्देशीय कॉरिडोर, मुंबई-सिन्धुदुर्ग ग्रीनफील्ड महामार्ग, जालना-नांदेड एक्सप्रेस हाइवे, रेवस-रेड्डी समुद्री मार्ग का निर्माण कर रहा है.

दूसरी तरफ देश के सबसे व्यस्त छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के भार को कम करने के लिए नवी मुंबई में दूसरे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का निर्माण किया जा चुका है. साथ ही नवी मुंबई को मुंबई से जोड़नेवाले ट्रान्स हार्बर लिंक भी शुरु हो चुका है. इसके अलावा मुंबई-दिल्ली ग्रीनफिल्ड एक्सप्रेसवे, मुंबई-नागपुर समृद्धि महामार्ग, मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे, मुंबई-गोवा महामार्ग से जेएनपीटी बंदरगाह से आयात निर्यात और मालवाहक वाहनों के तेज आवागमन को मदद मिलेगी. मुंबई, नवी मुंबई, ठाणे, पुणे, नागपुर आदि शहरों के यातायात को सुगम एवं आरामदायक बनाने के लिए मेट्रो का जाल बिछाया जा रहा है. मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे की दुरी कम करने के लिए अत्याधुनिक सुरंग एवं ब्रिजवाला कनेक्टिंग लिंक भी शुरु हो चुका है.

नागपुर, पुणे और मुंबई एमएमआर में लगभग ४०० कि.मी. की मेट्रो परियोजनाएं चल रही है. वर्धा में ड्राय पोर्ट का काम केन्द्र सरकार की ओर से शुरू है. मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन का काम भी तेजी से आगे बढ़ रहा है. मुंबई एमएमआर में लगभग ३०० कि.मी. के मेट्रो प्रोजेक्ट के साथ शिवडी-वरली कनेक्टर, मुंबई कोस्टल रोड, सूर्या जल परियोजना, बोरीवली-ठाणे भूमिगत मार्ग, ऐरोली भूमिगत मार्ग सहित कई अन्य महत्वपूर्ण योजनाएं चल रही हैं. एमएमआर में प्राधिकरण की तरफ से लगभग १.७५ लाख करोड़ रुपये के काम चल रहे हैं. मुंबई एमएमआर सहित पुणे, नाशिक, औरंगाबाद, कोल्हापुर, नागपुर सहित राज्य के अन्य हिस्सों में लगभग ६ लाख करोड़ रुपये के इन्फ्रा प्रोजेक्ट पाइपलाइन में हैं. उम्मीद हैं कि जल्द ही इसमें से कई योजनाएं पूरी हो जाएंगी, जिसका लाभ आम आदमी को मिलेगा.

व्यवसाय कौशल एवं कुशाग्रता

महाराष्ट्र देश का विशाल औद्योगिकृत राज्य है और देश के औद्योगिक क्षेत्र में अपनी अग्रता बनाए हुए है. इसने टाटा, शापुरजी पालनजी, महिन्द्रा एंड महिन्द्रा, आदित्य बिड़ला ग्रुप, बजाज ग्रुप, गोदरेज समूह, हीरानन्दानी समूह, रिलायन्स ग्रुप, पीरामल समूह जैसे देश के प्रसिद्ध औद्यौगिक घराने दिए हैं. यदि हम अरबपति उद्यमियों की बात करें तो मुंबई में ही 72 से अधिक अरबपति (हुसन ग्लोबल रिच लिस्ट 2022 के अनुसार) रहते हैं. देश में महाराष्ट्र में सबसे अधिक लघु उद्योग हैं और महाराष्ट्र को ही सबसे अधिक विशेष निर्यात संवर्द्धन जोन रखने का गौरव है.

मुंबई देश की वाणिज्यिक राजधानी मानी जाती है और कई वैश्विक बैंकिंग व वित्तीय सेवा कंपनियों का घर है. महाराष्ट्र का एक और प्रमुख नगर पुणे है जो उद्योग के अलावा एक स्थापित शैक्षणिक हब है. नाशिक, औरंगाबाद, कोल्हापुर, सातारा अन्य प्रमुख नगर हैं. विदर्भ में नागपुर ने संस्कृति एवं विकास के बीच अच्छा संतुलन बनाए रखा है. यूं कहें, राज्य में बडी संख्या में विविध उद्योग व सुविकसित सेवा क्षेत्र मौजूद हैं.

अर्थव्यवस्था पर एक नजर

महाराष्ट्र भारत के विकास का इंजन है.

महाराष्ट्र क्षेत्रफल की दृष्टि से **तीसरा** और जनसंख्या की दृष्टि से **दूसरा** सबसे बड़ा राज्य है.

महाराष्ट्र के जीडीपी का आकार **51 लाख करोड़ रुपये** (2025-26) का है, और यह देश के जीडीपी का 14 प्रतिशत है.

एफडीआई में सबसे बड़ी हिस्सेदारी - वर्ष 2025-26 में **1.54 लाख करोड़ रुपये** एफडीआई आकर्षित करने के साथ भारत में 31 प्रतिशत की हिस्सेदारी है.

उत्कृष्ट बुनियादी सुविधाएं:

- 4 अंतर्राष्ट्रीय एवं 8 राष्ट्रीय हवाई अड्डे
- दो प्रमुख और 53 छोटे पोर्ट
- पारंपरिक एवं अपारंपरिक स्त्रोतों से 38,601 मेगावाट की सबसे बड़ी विद्युत क्षमता

67 अरब डॉलर निर्यात के साथ भारत के निर्यात में 15 प्रतिशत की हिस्सेदारी

उत्कृष्ट गुणवत्ता कार्यबल-हर वर्ष कुल 4 लाख विद्यार्थी डिग्रीधारक बनते हैं. भारत में सर्वोत्तम कौशल विकास संस्थाएं.

891 इंजीनियरिंग, 1313 फार्मसी कॉलेज, 340 मैनेजमेंट कॉलेज वं 1006 आइटीआइ संस्थान

97 मिलियन इंटरनेट उपयोग कर्ता

133 मिलियन टेलीकॉम ग्राहक एवं 109 प्रतिशत टेली-डेन्सिटी

महाराष्ट्र के गौरव
संघर्ष और सफलता की दास्तान

सावित्रीबाई फुले

सावित्रीबाई फुले भारत की पहली महिला शिक्षिका और नारी शिक्षा की जननी मानी जाती हैं. उन्होंने 1848 में पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर पुणे में देश का पहला बालिका विद्यालय शुरु किया. समाज का विरोध और पत्थरबाजी सहकर भी उन्होंने शूद्र, अति-शूद्र और महिलाओं को पढ़ाने का बीड़ा उठाया. वे एक कवयित्री भी थीं. उनकी काव्य रचनाओं ने शिक्षा और समानता का संदेश फैलाया.

महाराष्ट्र सरकार ने लगभग 660 बिलियन डॉलर (लगभग ₹54 लाख करोड़) की अर्थव्यवस्था को गति देते हुए सुशासन, कल्याणकारी योजनाओं और बुनियादी ढांचे के विकास में ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं.

66 वर्ष 66 उपलब्धियां

अर्थव्यवस्था एवं उद्योग

1. **सर्वाधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) :** महाराष्ट्र लगातार देश में सर्वाधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित करने वाला राज्य बना हुआ है, जहां ₹1.64 लाख करोड़ से अधिक का विदेशी निवेश प्राप्त हुआ है.
2. **वैश्विक वित्तीय केंद्र :** मुंबई को वैश्विक वित्तीय राजधानी बनाने के उद्देश्य से बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स (BKC) का तेजी से विकास किया जा रहा है.
3. **मेगा निवेश परियोजनाएं :** ₹2.56 लाख करोड़ के मेगा निवेश प्रस्तावों को मंजूरी दी गई, जिससे 1 लाख से अधिक प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे.
4. **एआई हब बनने की दिशा में कदम :** महाराष्ट्र एआई नीति 2026 लागू कर ₹10,000 करोड़ निवेश और 1.5 लाख हाई-टेक रोजगार का लक्ष्य निर्धारित किया गया है.
5. **इलेक्ट्रॉनिक्स एवं नवाचार केंद्र :** 5 एआई इनोवेशन सिटी तथा अनेक हाई-टेक इनक्यूबेशन सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं.
6. **हरित ऊर्जा में प्रगति :** प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के लक्ष्यों को पार करते हुए सौर ऊर्जा आधारित घरेलू विद्युत व्यवस्था को बढ़ावा दिया गया है.
7. **विनिर्माण में अग्रणी :** भारत के कुल औद्योगिक उत्पादन में महाराष्ट्र की हिस्सेदारी लगभग 15% है.
8. **निर्यात में अग्रणी राज्य :** देश के कुल निर्यात में लगभग 20% योगदान देकर महाराष्ट्र निर्यात के क्षेत्र में अग्रणी बना हुआ है.
9. **MIDC विस्तार :** 289 महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम (MIDC) क्षेत्रों के माध्यम से औद्योगिक विकास को निरंतर गति दी जा रही है.
10. **विमानन क्षेत्र का विस्तार :** 5 अंतरराष्ट्रीय एवं 13 घरेलू हवाई अड्डों के माध्यम से राज्य की कनेक्टिविटी मजबूत हुई है.
11. **समुद्री व्यापार :** 2 प्रमुख और 53 लघु बंदरगाहों के माध्यम से समुद्री व्यापार को बढ़ावा दिया जा रहा है.
12. **रक्षा उत्पादन कॉरिडोर :** अत्याधुनिक रक्षा विनिर्माण एवं डिफेंस कॉरिडोर के विकास को गति दी गई है.
13. **ग्रीन स्टील परियोजना :** गढ़चिरौली में पर्यावरण-अनुकूल ग्रीन स्टील परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है.
14. **फार्मा एवं बायोटेक हब :** औषधि एवं चिकित्सा उपकरण निर्माण में महाराष्ट्र ने अपनी अग्रणी स्थिति बनाए रखी है.
15. **ऑटो एवं ईवी निर्माण :** महाराष्ट्र पारंपरिक ऑटोमोबाइल एवं इलेक्ट्रिक वाहन निर्माण का प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है.

बुनियादी ढांचा (Infrastructure)

16. **मुंबई मेट्रो नेटवर्क :** मुंबई मेट्रो का तीव्र विस्तार कर लाखों यात्रियों के दैनिक आवागमन समय में उल्लेखनीय कमी लाई गई.
17. **कोस्टल रोड परियोजना :** मुंबई कोस्टल रोड के संचालन से उत्तर-दक्षिण यात्रा समय में बड़ी कमी आई है.
18. **अटल सेतु (MTHL) :** भारत के सबसे लंबे समुद्री पुल का उद्घाटन कर मुंबई और नवी मुंबई के बीच संपर्क सुदृढ़ किया गया.
19. **समृद्धि महामार्ग :** नागपुर-मुंबई सुपर कम्युनिकेशन एक्सप्रेसवे के पूर्ण होने से यात्रा समय में उल्लेखनीय कमी आई है.
20. **नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा :** मुंबई एयरपोर्ट पर दबाव कम करने हेतु नवी मुंबई एयरपोर्ट का निर्माण तेजी से प्रगति पर है.
21. **बुलेट ट्रेन परियोजना :** मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण एवं निर्माण कार्य में तेजी लाई गई.
22. **ग्रामीण सड़क संपर्क :** मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के माध्यम से ग्रामीण संपर्क को मजबूत किया गया.
23. **पोर्ट आधारित विकास :** सागरमाला परियोजना के अंतर्गत समुद्री बुनियादी ढांचा को उन्नत किया गया.
24. **मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क :** माल परिवहन को अधिक कुशल बनाने के लिए अत्याधुनिक लॉजिस्टिक्स पार्क स्थापित किए जा रहे हैं.
25. **शहरी परिवहन उन्नयन :** उपनगरीय रेल नेटवर्क में सुधार कर लोकल और

लंबी दूरी की ट्रेनों के लिए अलग ट्रैक विकसित किए जा रहे हैं.

सामाजिक कल्याण एवं समावेशन

26. **लाडला भाई योजना :** 12वीं उत्तीर्ण युवाओं को ₹6,000 मासिक सहायता प्रदान करने की योजना शुरू की गई.
27. **राजर्षि छत्रपति शाहू महाराज शैक्षणिक शुल्क छात्रवृत्ति :** वंचित विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई गई.
28. **डॉ. पंजाबराव देशमुख छात्रावास निर्वाह भत्ता :** राज्य संचालित छात्रावासों में रहने वाले विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता दी गई.
29. **शिक्षा शुल्क विनियमन :** निजी व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों में अत्यधिक शुल्क वृद्धि पर नियंत्रण स्थापित किया गया.
30. **अल्पसंख्यक शिक्षा सहायता :** अल्पसंख्यक एवं दिव्यांग शिक्षण संस्थानों के बुनियादी ढांचे का उन्नयन किया गया.
31. **मौलाना आजाद अल्पसंख्यक वित्त विकास :** अल्पसंख्यक युवाओं के लिए रोजगार एवं ऋण सहायता हेतु पूंजी को ₹250 करोड़ तक बढ़ाया गया.
32. **अल्पसंख्यक आयोग को न्यायिक अधिकार :** महाराष्ट्र राज्य अल्पसंख्यक आयोग को न्यायिक अधिकार प्रदान किए गए.
33. **स्वच्छ विद्यालय अभियान :** सभी सरकारी विद्यालयों में स्वच्छ शौचालय एवं स्वच्छता सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं.
34. **श्रावण बाल सेवा योजना :** वरिष्ठ नागरिकों एवं जरूरतमंदों के लिए सामाजिक सुरक्षा पेंशन का विस्तार किया गया.
35. **दिव्यांग कल्याण :** दिव्यांगजनों के लिए व्यापक कल्याणकारी नीतियां तैयार की गईं.
36. **अनाथ बाल संरक्षण :** अनाथ एवं निराश्रित बच्चों के लिए मोबाइल सहायता एवं शिक्षा पहल शुरू की गई.
37. **महिला उद्यमिता प्रोत्साहन :** महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएं एवं औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए गए.
38. **कौशल विकास कार्यक्रम :** उद्योगों के सहयोग से युवाओं को रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण प्रदान किया गया.

स्वास्थ्य सेवा

39. **महात्मा ज्योतिबा फूले जन आरोग्य योजना एवं आयुष्मान भारत** के अंतर्गत ₹5 लाख तक स्वास्थ्य सुरक्षा.
40. **मुख्यमंत्री सहायता कक्ष** प्रत्येक जिले में स्थापित तथा व्हाट्सएप के माध्यम से सुलभ.
41. **कैंसर रोगियों हेतु विशेष स्वास्थ्य** सहायता योजनाएं.
42. सरकारी अस्पतालों में **निःशुल्क जेनेरिक दवाओं का वितरण.**
43. ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों एवं **PHC का आधुनिकीकरण.**
44. दूरदराज एवं आदिवासी क्षेत्रों में मोबाइल **मेडिकल यूनिट्स की तैनाती.**
45. **स्कूली बच्चों** के लिए व्यापक **स्वास्थ्य जांच अभियान.**
46. **मातृ एवं शिशु** मृत्यु दर में कमी हेतु **पोषण** एवं **नवजात देखभाल कार्यक्रम.**

कृषि एवं जल संरक्षण

47. **राष्ट्रीय जल पुरस्कार** में देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य घोषित.
48. किसानों को मात्र ₹1 में **फसल बीमा सुविधा.**
49. स्व. गोपीनाथ मुंडे **किसान दुर्घटना बीमा योजना** लागू.
50. **अटल सौर कृषि पंप योजना** के अंतर्गत हजारों सौर पंप स्थापित.
51. **मुख्यमंत्री सौर कृषि पंप योजना** के लक्ष्य सफलतापूर्वक पूर्ण.
52. **मत्स्य** व्यवसाय **को कृषि का दर्जा** प्रदान.
53. वर्षा प्रभावित किसानों को ₹31,628 करोड़ से अधिक **राहत सहायता.**
54. सूखा प्रभावित जिलों में रियायती दरों पर **खाद्यान्न वितरण.**
55. **तेंभू लिफ्ट सिंचाई परियोजना** को गति प्रदान.
56. अनुसूचित जाति एवं जनजाति किसानों को **डेयरी एवं पोल्ट्री सहायता.**
57. महाराष्ट्र देश का पहला राज्य बना जिसने 4 कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किए.
58. देशी **गौवंश संरक्षण** हेतु विशेष नीतियां.
59. **जैविक खेती** को प्रोत्साहन एवं अनुदान.

प्रशासन एवं डिजिटल सुशासन

60. ₹3 लाख से अधिक की सरकारी खरीद हेतु **ई-टेंडरिंग** अनिवार्य.
61. **"जीरो पेंडेंसी"** प्रणाली लागू कर प्रशासनिक कार्यों में तेजी.
62. **लोकतंत्र दिवस** (लोकशाही दिन) के माध्यम से जन शिकायतों का त्वरित निवारण.
63. **जिला संरक्षक सचिवों की नियुक्ति** द्वारा स्थानीय समस्याओं का समाधान.
64. Ease of Doing Business हेतु **नियमों का सरलीकरण** एवं जिला निर्यात प्रोत्साहन परिषदों की स्थापना.
65. RTI एवं सरकारी निर्णयों को **ऑनलाइन उपलब्ध** कर पारदर्शिता बढ़ाई गई.
66. **साइबर सुरक्षा** एवं डिजिटल प्रशासनिक ढांचे को मजबूत किया गया.

◆ ◆ ◆

एक ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी की ओर महाराष्ट्र का सफर विज़न, पब्लिक पार्टिसिपेशन, टेक्नोलॉजी और असरदार तरीके से लागू करने का मिला-जुला रूप है. 2029 तक एक ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमि और 2047 तक पांच ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी के लक्ष्य अब दूर नहीं है. महाराष्ट्र भारत को ग्लोबल इकोनॉमिक सुपरपावर बनाने में अहम भूमिका निभा रहा है.

इनोवेशन और स्टार्टअप के क्षेत्र में जैसे-जैसे इकोनॉमी बढ़ती है, आम लोगों को सबसे ज्यादा फायदा मिलता है. इसलिए, महाराष्ट्र की इकोनॉमी को एक ट्रिलियन डॉलर बनाने का लक्ष्य सिर्फ किस्मत का खेल नहीं है, यह महाराष्ट्र के 13 करोड़ लोगों की उम्मीदों को पूरा करने का संकल्प है. महाराष्ट्र न सिर्फ देश का ग्रोथ इंजन है, बल्कि मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि यह देश का सबसे ऊंचे स्टैंडर्ड ऑफ़ लिविंग वाला राज्य बनेगा.

यह ध्यान देने योग्य है कि 119 यूनिकॉर्न में से 28 महाराष्ट्र में हैं. 146 से ज्यादा इनक्यूबेटर के साथ महाराष्ट्र देश का लीडिंग राज्य है. देश के 20 परसेंट स्टार्टअप्स के जरिए एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा दिया जा रहा है. महाराष्ट्र आज सिर्फ एक इंडस्ट्रियल राज्य ही नहीं है, बल्कि यह इनोवेशन का सेंटर भी बन रहा है. सभी के सहयोग से महाराष्ट्र को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का बड़ा संकल्प लिया गया है.

महाराष्ट्र आज देश का लीडिंग राज्य है, लेकिन साथ ही, यह भारत के इकॉनॉमिक भविष्य के लिए गाइड भी बन रहा है. 'महाराष्ट्र देश का पहला वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनेगा' यह संकल्प सिर्फ एक नारा नहीं है, यह ठोस प्लानिंग, बड़े पैमाने पर पब्लिक पार्टिसिपेशन और असरदार तरीके से लागू करने का नतीजा है. जहां भारत पांच ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी की ओर बढ़ रहा है, वहीं महाराष्ट्र ने एक कदम आगे बढ़कर अपने लिए एक ट्रिलियन डॉलर का टारगेट तय किया है. देश की GDP में लगभग 14 परसेंट का योगदान, सर्विस सेक्टर में 24 परसेंट और एग्रीकल्चर एक्सपोर्ट में 12 परसेंट की हिस्सेदारी के साथ, यह राज्य इस लक्ष्य के काबिल है.

महाराष्ट्र की इकोनॉमी आज करीब 51 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गई है. 2012-13 में यह सिर्फ 13 लाख करोड़ रुपये थी. यानी, एक दशक में यह चार गुना बढ़ी है और वह भी लगातार. GST कलेक्शन में महाराष्ट्र देश में सबसे ऊपर है. करीब 3.6 लाख करोड़ रुपये का कलेक्शन राज्य की इकोनमिक क्षमता का सबूत है. साथ ही, फिस्कल डिसिप्लिन बनाए रखना और डेट-टू-GDP रेशियो को कंट्रोल करना राज्य के सक्षम इकोनॉमिक मैनेजमेंट की निशानी है. ध्यान रहें कि देश का दूसरा सबसे बड़ा राज्य GST में 2 लाख करोड़ रुपये भी इकट्ठा नहीं करता है.

'विकसित महाराष्ट्र' प्लान

हमने महाराष्ट्र के लिए एक विकसित प्लान तैयार किया है. इसे तैयार करते समय हमने इस बात पर भी विचार किया है कि महाराष्ट्र का आखिरी तबका क्या सोचता है, महाराष्ट्र की दिशा क्या होनी चाहिए. इस प्लान को तैयार करने में सबसे ज़रूरी फैक्टर जनता की भागीदारी है. 3.8 लाख नागरिकों की सीधी भागीदारी और सात लाख से ज्यादा सुझावों के आधार पर तैयार किया गया 'विकसित महाराष्ट्र' प्लान, लोगों को ध्यान में रखकर काम करने वाले प्रशासन का एक बेहतरीन उदाहरण है. यह रोडमैप 16 रीजनल ग्रुप, 40 डिपार्टमेंट और दो सौ से ज्यादा एक्सपर्ट की भागीदारी से तैयार किया गया है.

महाराष्ट्र का विकास चार बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित है.... प्रगतिशीलता, स्थिरता, सबको साथ लेकर चलना और सुशासन. इन सिद्धांतों के आधार पर, 16 मुख्य थीम और 100 पहले की पहचान की गई है. उद्देश्य भी उतने ही साफ़ हैं. हर साल 10 लाख नौकरियों का सृजन प्रति व्यक्ति आय में दस गुना बढ़ोतरी, 13 से 14 ट्रिलियन डॉलर का निवेश आकर्षित करना.

संतुलित विकास का एक मॉडल

देश के कुल विदेशी निवेश का 39 परसेंट महाराष्ट्र को मिलता है. दावोस जैसे ग्लोबल प्लेटफ़ॉर्म पर राज्य द्वारा साइन किए गए एग्रीमेंट सिर्फ कागज़ों पर नहीं हैं, बल्कि लागू होने के स्टेज पर पहुंच रहे हैं. महाराष्ट्र क्वांटम कंप्यूटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा सेंटर, इलेक्ट्रिक व्हीकल, सेमीकंडक्टर, ग्रीन स्टील जैसे भविष्य के सेक्टर में आगे बढ़ रहा है. खास बात यह है कि यह निवेश सिर्फ मुंबई-पुणे तक ही सीमित नहीं है, बल्कि नागपुर, अमरावती, छत्रपति संभाजीनगर, कोंकण जैसे सभी इलाकों तक पहुंच रहा है. यह माइनिंग एरिया बैलेंस्ड डेवलपमेंट का एक मॉडल है.

गढ़चिरौली भविष्य की 'स्टील सिटी' होगी. हालांकि वहां माइनिंग के दौरान कुछ पेड़ काटे गए हैं, लेकिन इस इलाके को डेवलप करते समय पर्यावरण संरक्षण को सबसे ज्यादा प्राथमिकता दी गई है. पांच करोड़ पेड़ लगाने का संकल्प और स्थानीय आदिवासियों को रोजगार देकर 'स्टील सिटी' बनाने की कोशिश, सबको साथ लेकर चलने वाले और टिकाऊ विकास का एक बड़ा उदाहरण है. 2027 में नासिक में होने वाला कुंभ मेला हमारे लिए एक मौका है.

सिर्फ धार्मिक वजहों से ही नहीं, बल्कि नासिक और उसके आस-पास के टूरिज़्म को बढ़ाने के लिए भी. कुंभ मेले के लिए बनाए गए रोड, रिंग रोड, सैनिटेशन प्रोजेक्ट, एयरपोर्ट वगैरह जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर नासिक इलाके के लंबे समय के डेवलपमेंट के लिए फायदेमंद हैं. अयोध्या और काशी की तरह, महाराष्ट्र ने भी धार्मिक टूरिज़्म के जरिए इकोनॉमी को बढ़ावा देने की क्षमता को पहचाना है

महाराष्ट्र के विकास में किसानों का अहम रोल है. खेती और किसानों का विकास राज्य के विकास का आधार है. राज्य ने सस्टेनेबल सिंचाई के लिए खेती के सौर पंप बांटने में बहुत तेजी लाकर किसानों को बड़ी राहत दी है. कुछ सालों में लाखों सौर पंप बांटे गए. साथ ही, बिजली बिल में छूट के लिए 23 हजार करोड़ रुपये दिए गए.

100 करोड़ रुपये खर्च कर किसानों को राहत पहुंचाई गई है. यह कृषि और किसानों को सशक्त बनाने का प्रयास है.

e-HRMS जैसे डिजिटल सिस्टम ने एडमिनिस्ट्रेशन को ज़्यादा ट्रांसपेरेंट और एफिशिएंट बना दिया है. सरकार ने दशकों से पेंडिंग पड़ी कम्पनसेशन अपॉइंटमेंट्स को पूरा करके सेंसिटिविटी की मिसाल कायम की है.

एक ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी की ओर महाराष्ट्र का सफर सिर्फ नंबरों का खेल नहीं है. यह विजन, पब्लिक पार्टिसिपेशन, टेक्नोलॉजी और असरदार इम्प्लीमेंटेशन का संगम है. 2029 तक एक ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी और 2047 तक पांच ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी के लक्ष्य अब दूर नहीं लगते. महाराष्ट्र भारत को ग्लोबल इकोनॉमिक सुपरपावर बनाने में अहम भूमिका निभा रहा है.

'वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य'

श्री देवेन्द्र फडणवीस

मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र सरकार

आम आदमी का जीवन खुशहाल बनाना ही, विजन

महाराष्ट्र के लिए हमारा विजन एक ही रहा है, वह है आम आदमी की जिंदगी में खुशियां लाना. पहले मैं मुख्यमंत्री था, अब महायुति सरकार में देवेंद्र फडणवीस मुख्यमंत्री है, और मैं उपमुख्यमंत्री. हमारा फोकस हमेशा गरीब, मेहनतकश, आम आदमी पर रहा है. अगर आप पिछले साढे तीन-चार साल के हमारे फैसलों को देखेंगे, तो आप पायेंगे कि हमने सिर्फ सड़कें, पुल, बिल्डिंग ही नहीं बनाई, बल्कि इस बात पर भी ध्यान दिया है कि लोगों की जिंदगी कैसे खुशहाल बने. इसे सिर्फ आर्थिक विकास के आंकड़ों में नहीं मापा जा सकता.

महाराष्ट्र के लिए अपना विज़न शेयर करने से पहले, मैं आपका ध्यान एक बात पर दिलाना चाहता हूं. पिछले लगभग 4 साल से राज्य के लोग महायुति सरकार का काम देख रहे हैं. हमारे एडमिनिस्ट्रेशन पर भरोसा करके और एक उम्मीद के साथ, राज्य के लोगों ने दूसरी बार फिर महायुति सरकार को राज्य चलाने का मौका दिया. इससे हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है. शिवसेना और महायुति सरकार ने दो साल पहले हुए लोकसभा और असेंबली इलेक्शन में ज़बरदस्त परफॉर्म किया था, और हाल ही में म्युनिसिपल और नगर पंचायत इलेक्शन में भी महायुति का भगवा पूरे राज्य में लहराया है. इसकी वजह यह है कि लोग अब डेवलपमेंट चाहते हैं और उन्हें पूरा भरोसा है कि कौन सी पार्टी यह डेवलपमेंट दे सकती है. हम सिर्फ इसलिए खुश नहीं होंगे कि हम जीत गए हैं, बल्कि हमें आम आदमी की जिंदगी में खुशियां लाने और महाराष्ट्र को देश का लीडिंग स्टेट बनाने के लिए कदम उठाने होंगे, और हमने इसकी शुरुआत कर दी है.

एक तरफ, राज्य के विकास की रफ्तार बढ़ाने के साथ-साथ हमने राज्य के सामने आने वाली चुनौतियों पर भी प्राथमिकता के आधार पर विचार किया. आज महाराष्ट्र को पूरी तरह से सूखा-मुक्त बनाना है. हर जिले की इंडस्ट्रियल और आर्थिक क्षमता को बढ़ाना है. हम यह भी देखेंगे कि रोज़गार के साथ-साथ सेल्फ-एम्प्लॉयमेंट कैसे बढ़े, खासकर युवाओं में, छोटे और बड़े बिजनेस से एंटरप्रेन्योर कैसे बनें. इसके अलावा, हमने राज्य की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना, उनका उत्थान करना, उनकी सुरक्षा करना, राज्य के किसानों को मजबूत बनाना, उन्हें अलग-अलग आपदाओं से बचाना, फसलों के अच्छे दाम देना, सही मार्केटिंग चेन बनाना, अच्छी क्वालिटी और एक्सपोर्ट वाला प्रोडक्शन कैसे होगा, सिंचाई कैसे बढ़ेगी, सोलर एनर्जी का इस्तेमाल कैसे होगा, किसानों को दिन में बिना रुकावट बिजली कैसे मिलेगी, इन सब पर काम शुरू कर दिया है. आपदाग्रस्त किसानो को कर्ज माफ़ी दी है.

जीवन स्तर में बड़ा बदलाव लाना होगा

जब हम किसी राज्य की आर्थिक मजबूती की बात करते हैं, तो हमें इंडस्ट्री और इन्वेस्टमेंट का जिक्र करना ही पड़ता है, लेकिन, किसानों, मजदूरों, महिलाओं, युवाओं और काम करने वालों की मेहनत की कीमत कई गुना ज्यादा है. ये फैक्टर्स ही हमारे राज्य की असली नींव हैं और इसलिए, हमारा मुख्य लक्ष्य उनके जीवन स्तर में बड़ा बदलाव लाना होगा. इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का नेतृत्व और सहयोग मिला है, जिन्होंने देश को नई उंचाई पर पहुंचाया है.

हमारी प्राथमिकता आम आदमी को सस्ते घर देना है. इसे ध्यान में रखते हुए, हम एक पूरी हाउसिंग पॉलिसी लाए हैं. हमने नियमों में बदलाव किया है. हमने क्लस्टर डेवलपमेंट को बढ़ावा दिया है. रिहैबिलिटेशन और रिडेवलपमेंट पर जोर देते हुए बड़े पैमाने पर घरों का कंस्ट्रक्शन शुरू हो गया है. हमने मुंबई को स्लम-फ्री बनाने का फैसला किया है. हम मिल वर्कर्स को घर दे रहे हैं.

संसाधनों पर ध्यान

बड़े शहरों में मेट्रो लाइन, पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम को मजबूत करना, गांव के इलाकों में नीचे तक अच्छी सड़कें बनाना और दूसरे इंफ्रास्ट्रक्चर के काम बड़े पैमाने पर किए जा रहे हैं. मुंबई की बात करें तो, मेट्रो 3, जिसका सभी मुंबईकर इंतजार कर रहे थे, पूरी तरह से शुरू हो चुकी है. कोस्टल रोड की वजह से ट्रैफिक जाम खत्म हो गया है. अब हम ऑरेंज गेट से मरीन ड्राइव तक दो अंडरग्राउंड टनल बना रहे है. जिससे ट्रैफिक आसान हो जाएगा, लेकिन मैं हमेशा कहता हूं कि डेवलपमेंट सिर्फ सडकें, पुल, टनल और बिल्डिंग बनाना नहीं है. जब किसी दूर-दराज के इलाके में आदिवासी आश्रम स्कूल में पढ़ने वाला स्टूडेंट हायर एजुकेशन लेकर किसी नामी कंपनी में सीनियर पोस्ट पर जाता है या सरकारी नौकरी में बड़ा पद पाता है, तो वही असली डेवलपमेंट है. जब कपड़े धोने वाली एक महिला सेल्फ-हेल्प ग्रुप के जरिए पूरे परिवार का गुजारा चलाती है, तो यह सिर्फ उसकी तरक्की नहीं है, इसे ध्यान में रखते हुए हम आने वाले दिनों में महिला सेल्फ-हेल्प ग्रुप को और बढ़ावा देंगे.

उद्योग में अग्रणी

हमारी महायुती सरकार के पहले ढाई साल वाली फेसबुक लाईव सरकार के कार्यकाल में महाराष्ट्र देश के राज्यों की डेवलपमेंट रैंकिंग में नीचे खिसकता हुआ दिख रहा था. ऐसे मुश्किल हालात में राज्य की इकॉनामी को पटरी पर लाना और इन्वेस्टर्स, एंटरप्रेन्योर्स और आम लोगों में भरोसा जगाना ही हमारा मकसद था. हमने इसे उठाया और आज महाराष्ट्र इंडस्ट्रियल सेक्टर में तेजी से आगे बढ़ रहा है.

आज महाराष्ट्र देश का ग्रोथ इंजन बन गया है . देश की कुल GDP में महाराष्ट्र का हिस्सा 13.5 परसेंट है, और GDP, एक्सपोर्ट, टैक्स कलेक्शन और FDI समेत सभी पैमानों पर महाराष्ट्र पहले नंबर पर है. फाइनेंशियल ईयर 2024-25 में महाराष्ट्र को 1,64,875 करोड़ रुपये का फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट मिला. यह इन्वेस्टमेंट देश के कुल FDI का 39 परसेंट जितना था. अकेले 2025-26 के पहले छह महीनों में ही राज्य में 91,337 करोड़ रुपये का इन्वेस्टमेंट हुआ, और उस दौरान देश के कुल FDI इन्वेस्टमेंट का 30 परसेंट अकेले महाराष्ट्र में आया. हाल ही में दावोस में मुख्यमंत्री और इंडस्ट्री मिनिस्टर ने 18 देशों की कंपनियों के साथ करीब 30 लाख करोड़ रुपये के MoU साइन किए. इस इन्वेस्टमेंट से क्वांटम कंप्यूटिंग, AI और डेटा सेंटर, ग्रीन एनर्जी, सेमीकंडक्टर, ऑटोमोबाइल और इलेक्ट्रिक व्हीकल, स्टील, शिप बिल्डिंग, एग्रीकल्चरल टेक्नोलॉजी, हेल्थकेयर, फूड प्रोसेसिंग, एजुकेशन, लॉजिस्टिक्स और फिनटेक जैसे अलग-अलग सेक्टर में बड़े पैमाने पर इंडस्ट्री लगाई जा रही हैं. एशिया का सबसे बड़ा ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर मुंबई में बनाया जाएगा, जिससे 15,000 डायरेक्ट और 30,000 इनडायरेक्ट नौकरियां मिलेंगी,

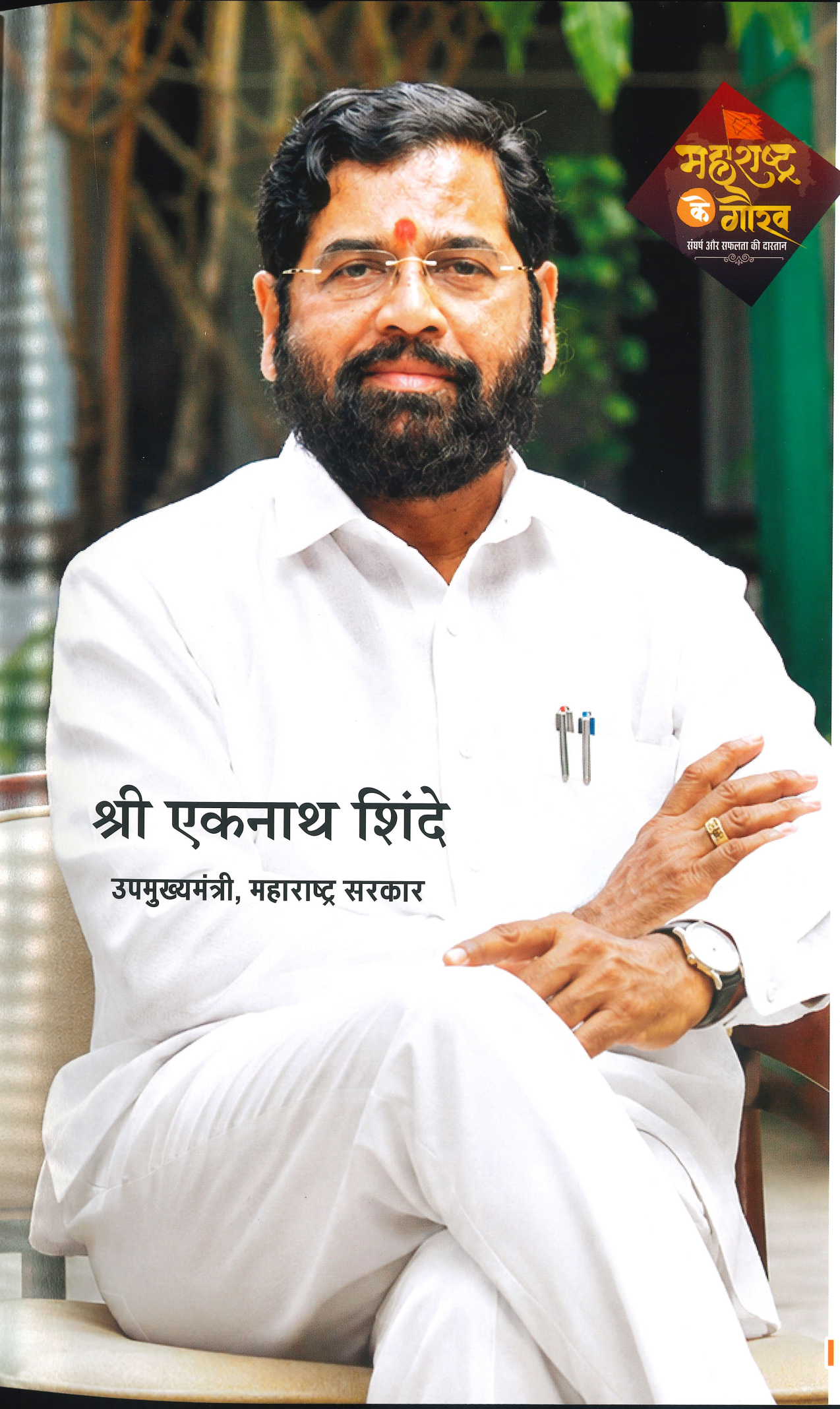

यानी कुल 45,000 नौकरियां. माइक्रोसॉफ्ट ने भारत में 1,700 करोड़ रुपये के इन्वेस्टमेंट के लिए महाराष्ट्र को प्राथमिकता दी है, जो महाराष्ट्र की साख का सबूत है. इसके अलावा, मुंबई 3.0 रायगढ़ पेन ग्रोथ सेंटर और भारत के पहले महाराष्ट्र इनोवेशन सिटी प्रोजेक्ट में लगभग 1 लाख करोड़ रुपये का निवेश होगा. हमारी सरकार ने 2026 से 2030 के समय के लिए महाराष्ट्र इंडस्ट्री, इन्वेस्टमेंट और सर्विसेज पॉलिसी 2025 की घोषणा की.

कृषि में उन्नत प्रौद्योगिकी

किसान अन्नदाता है. एक तरफ हमने उसे कुदरत की मार से बचाने और दूसरी तरफ उसकी इनकम बढ़ाने के लिए दोहरे लेवल पर काम करना शुरू किया है. जिस दिन से हम सत्ता में आए हैं, सरकार पूरी ताकत से किसानों के साथ खड़ी है. डेयरी फार्मिंग और पशुपालन जैसे सह उद्यमों से किसानों को मजबूत बनाया जा रहा है.

पिछले मॉनसून में, राज्य में कई जगहों पर भारी बारिश और बाढ़ की वजह से किसानों को बहुत नुकसान हुआ, जिसके लिए हम सिर्फ पैसे की मदद का ऐलान करके नहीं रुके, हमने किसानों को काफी मदद दी. नमो महासम्मान निधि योजना के तहत, किसानों को हर साल 6,000 रुपये मिलते है. 172 सिंचाई प्रोजेक्ट्स के लिए रिवाइज्ड मंजूरी दी गई. पिछले लगभग चार सालों में बहुत सारे काम हुए हैं और आने वाले समय में और तेजी से होंगे. अलग-अलग खेती के प्रोडक्ट्स की वैल्यू चेन बनाकर किसानों को मजबूत करने का काम किया जाएगा.

अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी AI का जमाना है. महाराष्ट्र में हाल ही में देश का पहला AI एग्रीकल्चर कॉन्फ्रेंस हुआ. आने वाले समय में हम इसी टेक्नोलॉजी से खेती करेंगे. इस पॉलिसी के जरिए हम 70 लाख 50 हजार करोड़ रुपये का इन्वेस्टमेंट लाएंगे और करीब 50 लाख डायरेक्ट जॉब्स सृजित करेंगे. हमने 2047 तक इंडस्ट्रीज़ का हिस्सा 30 परसेंट और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का हिस्सा 20 परसेंट तक बढ़ाने का क्लियर प्लान तैयार किया है. हमने एक करोड़ MSME इंडस्ट्रीज़ शुरू करने का लक्ष्य रखा है. इसके साथ ही एनिमेशन - गेमिंग - VFX XR पॉलिसी, ग्लोबल कॉम्प्युटेंस सेंटर पॉलिसी, जेम्स एंड ज्वेलरी पॉलिसी, बैम्बू इंडस्ट्री पॉलिसी जैसी कई पॉलिसीज़ अनाउंस की गई हैं. इससे लाखों रोजगार के मौके बनेंगे, एक्सपोर्ट बढ़ेगा और महाराष्ट्र ग्लोबल प्लेटफ़ॉर्म पर और ज़्यादा काबिल बनेगा.

महाराष्ट्र के लोगों ने महायुति सरकार पर जो ज़बरदस्त भरोसा दिखाया है, वह हमारे लिए पॉलिटिकल अचीवमेंट से ज्यादा ज़िम्मेदारी का अहसास है. हमारा विज़न एक प्रोग्रेसिव, खुशहाल और सुरक्षित महाराष्ट्र बनाना है और हम इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए लगातार कदम उठाते रहेंगे...

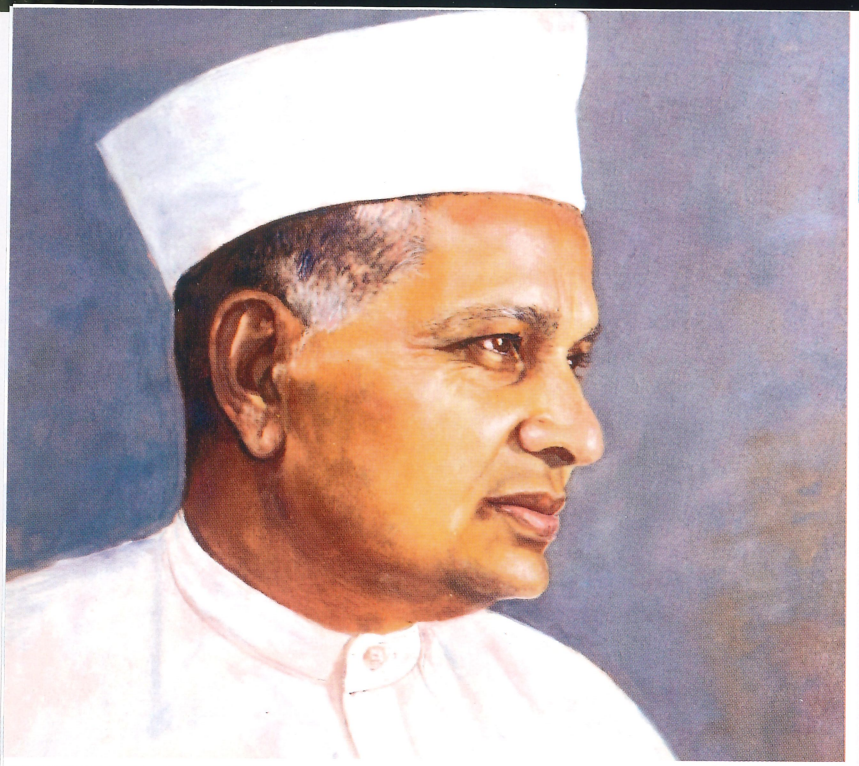

श्री जमनालाल बजाज

सादगी, त्याग और देशप्रेम की मिसाल

४ नवंबर १८८९ में जन्मे श्री जमनालाल बजाज एक दूरदर्शी व्यक्तित्व थे, जिनकी विनम्रता, साहस और सेवा भावना आज भी भारत की आत्मा को परिभाषित करती है. राजस्थान के सीकर ज़िले के काशी के बास गांव में एक साधारण किसान कनीराम बजाज के घर जन्मे जमनालाल को वर्धा, महाराष्ट्र के निवासी सेठ बच्छराज बजाज ने चार-पांच वर्ष की आयु में गोद लिया. यही वह क्षण था जिसने उनके जीवन को उद्योग और व्यापार की दिशा दी. सन् १९१५ में उनकी मुलाक़ात महात्मा गांधी से हुई, और तभी से भारत की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता उनके जीवन का ध्येय बन गई. उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई 'राय बहादुर' की उपाधि को ठुकरा दिया, स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए और जेल तक गए - क्योंकि उनके लिए भारत की आज़ादी स्वयं से भी अधिक मूल्यवान थी. जमनालाल जी अपने युग के उन महान लोगों में थे जो ट्रस्टीशिप के सिद्धांत में विश्वास करते थे. वे स्वयं को अपनी संपत्ति का मालिक नहीं बल्कि प्रबंधक मानते थे. गांधीजी उन्हें अपने सबसे निष्ठावान अनुयायी के रूप में देखते थे और स्नेहपूर्वक उन्हें "अपना पांचवां पुत्र" कहा करते थे. १९२० के दशक में गांधीजी ने जब कहा,"जमनालाल, तुम भारत में चीनी क्यों नहीं बनाते?" तो वही प्रश्न एक औद्योगिक क्रांति की शुरुआत बन गया. सन् १९३१ में जमनालाल जी ने उत्तर प्रदेश के गोला गोकर्णनाथ में बजाज समूह की पहली चीनी मिल स्थापित की.

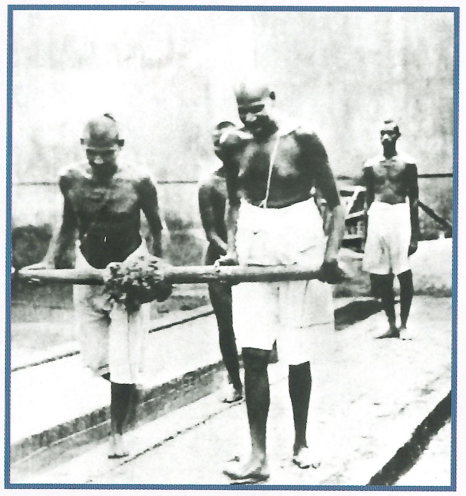

जेल में कैदियों के साथ सजा काटते हुए जमनालाल जी

जयपुर जेल से छूटने के बाद, प्रियजनों की भीड़ में जमनालाल जी

सरदार पटेल एवं अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ, गांधीजी का हाथ थामे श्री जमनालाल बजाज

गोला गोकर्णनाथ में बजाज समूह की पहली चीनी मिल

महाराष्ट्र के गौरव
संघर्ष और सफलता की दास्तान

श्री शिशिर बजाज

अध्यक्ष: बजाज फाउंडेशन

भारत के औद्योगिक और सामाजिक इतिहास में बजाज परिवार वह नाम है, जिसने व्यवसाय को केवल लाभ का साधन नहीं, बल्कि समाज के उत्थान का माध्यम बनाया है. करीब एक शतक पहले श्री जमनालाल बजाज द्वारा रची गई इस गौरवशाली परंपरा को उनके पोते श्री शिशिर बजाज अपने परिवार के साथ आज भी पूरी निष्ठा से निभा रहे हैं और वर्ष २०२६ में महाराष्ट्र का गौरव बढ़ा रहे हैं.

महाराष्ट्र के गौरव
संघर्ष और सफलता की दास्तान

लोकमान्य तिलक

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक स्वतंत्रता संग्राम के राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रमुख नेता थे, जिन्हें लोकमान्य की उपाधि मिली थी. उन्होंने **स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे** का नारा देकर देश में आजादी की चेतना जगाई. गणेशोत्सव और शिवजयंती को सार्वजनिक रूप से मनाकर उन्होंने लोगों को स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए एकजूट करने का कार्य किया. वे महान गणितज्ञ, लेखक और पत्रकार थे. केसरी और मराठा अखबारों से उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आवाज बुलंद की.

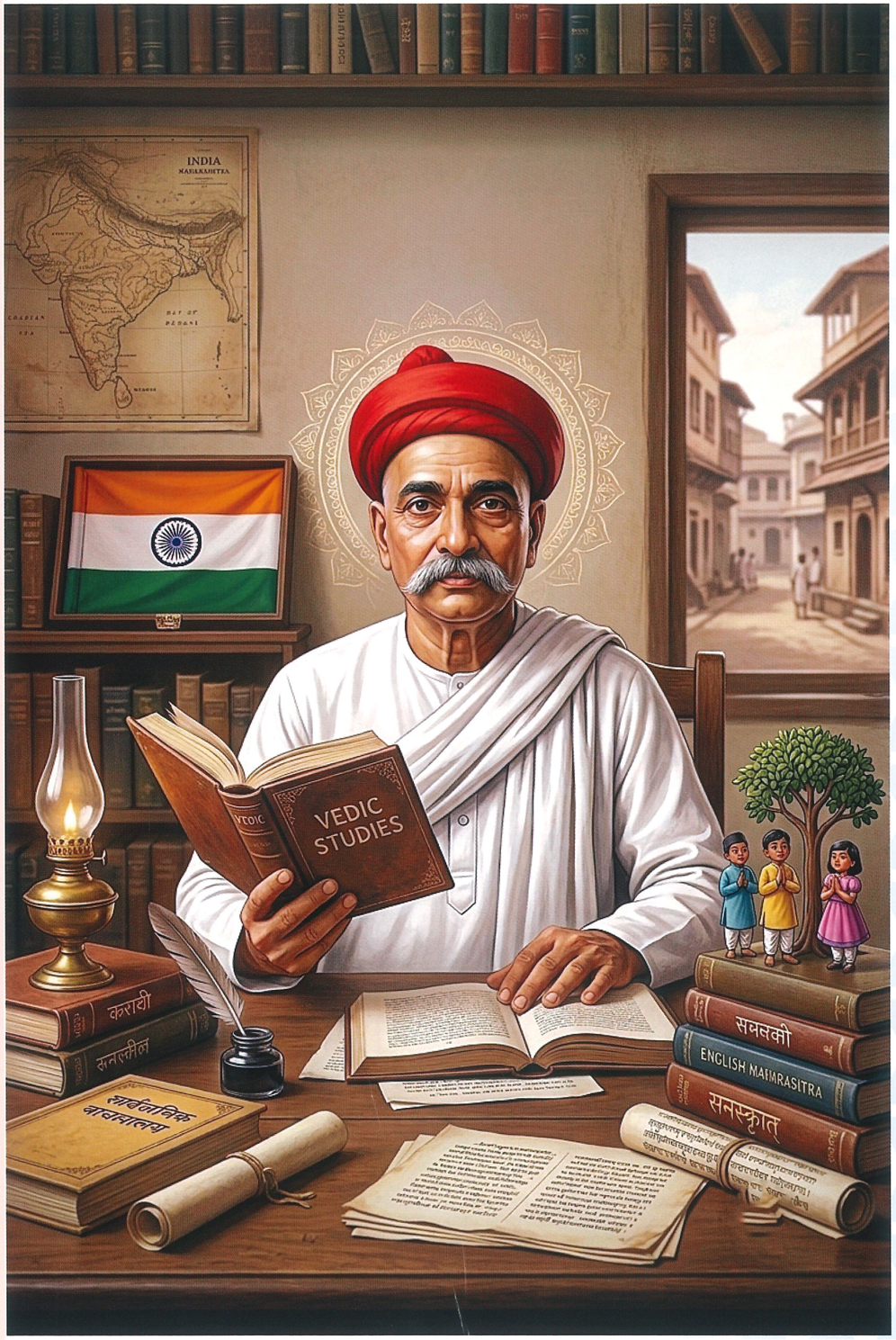

SERUM INSTITUTE OF INDIA
Cyrus Poonawalla Group

सफल वैश्विक व्यवसाय और असीमित परोपकार

भारत के औद्योगिक और स्वास्थ्य क्षेत्र में यदि किसी एक व्यक्ति ने विश्व स्तर पर अपनी स्थायी छाप छोड़ी है, तो वह नाम है साइरस पूनावाला. वे न केवल भारत के अग्रणी उद्योगपति हैं, बल्कि वैश्विक टीकाकरण आंदोलन के प्रमुख स्तंभ भी माने जाते हैं. सफल व्यवसाय के साथ-साथ वे महान परोपकारी भी है तथा उनके द्वारा तैयार किए गए वैक्सीन के बीते कई वर्षों से देश में टीकाकरण हो रहा है. साथ में इन्ही टीकों के चलते कोविड जैसी भयंकर महामारी ने पूरे विश्व में भारत का मान और भी ऊंचा किया है. उनकी दूरदृष्टि, जोखिम उठाने की क्षमता और सामाजिक प्रतिबद्धता को देखें तो आज वे कई लोगों के लिए प्रेरणा के स्त्रोत है.

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

साइरस पूनावाला का जन्म १९४१ में पुणे के एक पारसी परिवार में हुआ. उनके पिताजी का नाम सोली तथा माता का नाम गूल था. उनके परिवार का संबंध घुड़दौड़ और रेसिंग व्यवसाय से था. उनके पिता सोली पूनावाला एक घोड़ा ब्रीडर थे. साइरस ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पुणे में प्राप्त की और आगे की पढ़ाई के लिए वे बृहन् महाराष्ट्र कॉमर्स कॉलेज (BMCC) गए और वहां उन्होंने ग्रेजुएशन की डिग्री प्राप्त की.

वैसे तो उनका परिवार घुडदौड़ और व्यापार से जुड़ा था. लेकिन उन्होंने व्यवसाय में कुछ अनोखे प्रयोग करने का फैसला लिया.

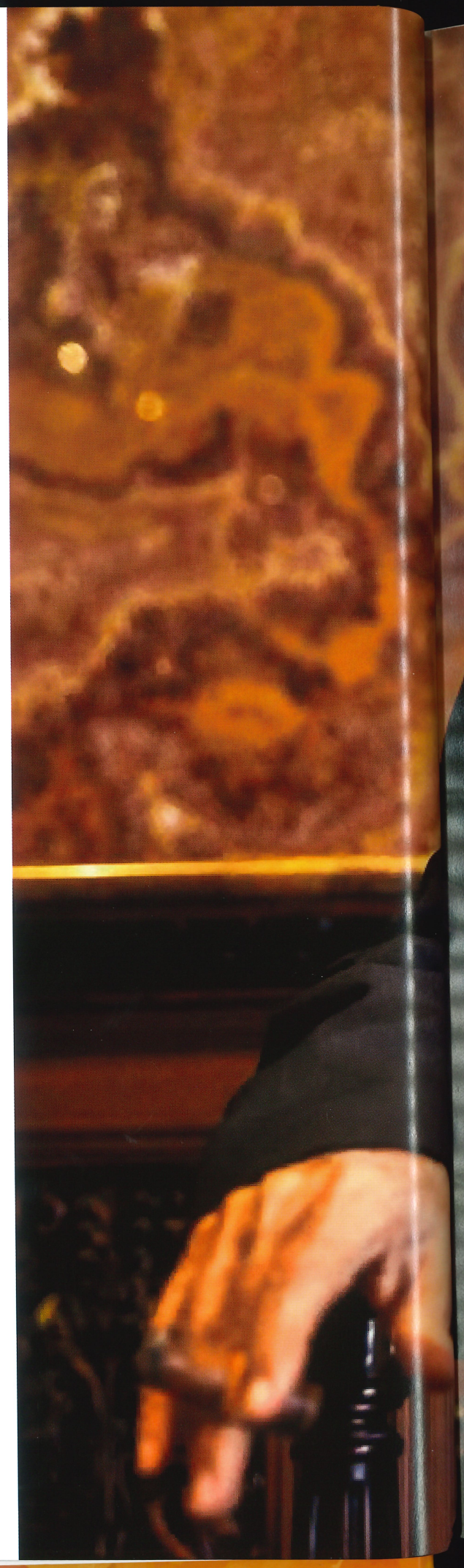

डॉ. साइरस पूनावाला

चेयरमैन और प्रबंध निदेशक:
साइरस पूनावाला समूह

सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया की शुरुआत

साइरस युवावस्था से ही काफी साहसिक और प्रयोगशील भी थे. घुड़दौड़ तथा घोड़ों का उनका व्यापार चल रहा था. घोड़ों का स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिए उनका रक्त लिया जाता था. वहीं दूसरी ओर देश में १९६० के दशक में भारत में टिटनेस और डिप्थीरिया जैसी बीमारियों के टीके आयात किए जाते थे. ये महंगे होते थे और आम लोगों की पहुंच से बाहर थे. घोड़ों से जो रक्त लिया जाता है, उसी से एंटी टिटेनस सीरम के टीके बनाए जा सकते हैं, यह जानकारी साइरस को एक सरकारी लैब से प्राप्त हुई. तत्पश्चात उन्होंन देखा कि, देश में इस घोड़ों की संख्या काफी ज्यादा है. फिर क्या साइरस ने इस दिशा में आगे बढ़ने का फैसला लिया. फिर वर्ष १९६६ में उन्होंने सीरम इंस्टीट्यूट की स्थापना की.

उन्होंने पुणे में अपने पारिवारिक घोड़ा फार्म से शुरुआत की और धीरे-धीरे वैक्सीन निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाए. प्रारंभ में टिटनेस और डिप्थीरिया जैसे टीकों का उत्पादन किया गया. आज सीरम इंस्टीट्यूट विश्व का सबसे बड़ा वैक्सीन निर्माता है. यह १७० से अधिक देशों को टीके निर्यात करता है और WHO, UNICEF तथा GAVI जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ कार्य करता है. सीरम इंस्टीट्यूट द्वारा तैयार किए गए एंटी टिटनेस टीकों के कारण भारत में अनगिनत लोगों को अच्छा स्वास्थ्य लाभ मिला तथा कईयों को नया जीवन मिला है.

कोरोना महामारी में सीरम का सर्वोत्तम कार्य

वर्ष २०२० में पूरे विश्व को कोरोना महामारी ने जड़ से हिला दिया. बीमारों और मौतों की संख्या बढ़ने के साथ ही विश्वभर में हाहाःकार मच गया. ऐसे में कोविड महामारी को रोकने के लिए टीके की आवश्यकता था. इस समय दुनिया भर की कंपनियां टीके के अनुसंधान के लिए जमकर प्रयास कर रही थी. ऐसे में सीरम इंस्टीट्यूट ने ऑक्स्फोर्ड युनिवर्सिटी के साथ मिलकर 'कोविशिल्ड' नाम से टीका तैयार किया. यह टीका महामारी को रोकने में काफी कारगर साबित हुआ. भारत समेत विश्वभर में इस टीके के अरबों डोजेस तैयार किए गए और लोगों को लगवाए गए. इस कारण कोरोना महामारी को खत्म करने में विश्व को काफी सहयोग प्राप्त हुआ. यह सब संभव हुआ साइरस पूनावाला के दूरदर्शी प्रयासों के चलते

साइरस पूनावाला की सबसे बड़ी विशेषता है– दीर्घकालिक दृष्टि. उन्होंने हमेशा कम कीमत पर उच्च गुणवत्ता वाले टीके उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा. उनका मानना है कि स्वास्थ्य सेवा लाभ कमाने का साधन मात्र नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है. यही कारण है कि उनके टीके अफ्रीका और एशिया के गरीब देशों तक सुलभ दरों पर पहुंच सके. उनके नेतृत्व में सीरम इंस्टीट्यूट ने रिसर्च एंड डेवलपमेंट पर निरंतर निवेश और प्रयास किए हैं. उनके पुत्र अदार पूनावाला वर्तमान में कंपनी के सीईओ हैं और वैश्विक स्तर पर कंपनी के विस्तार का नेतृत्व भी कर रहे हैं.

अन्य व्यावसायिक उपक्रम

हालांकि सीरम इंस्टीट्यूट उनकी सबसे बड़ी पहचान है, परंतु साइरस पूनावाला का व्यावसायिक साम्राज्य इससे कहीं व्यापक है. जिसमें प्रमुख है :

पूनावाला फिनकॉर्प

यह समूह वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र में भी सक्रिय है. Poonawalla Fincorp एक गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC) है, जो उपभोक्ता और व्यावसायिक ऋण प्रदान करती है.

- उपभोक्ता ऋण
- व्यावसायिक ऋण

रियल एस्टेट और लक्ज़री प्रॉपर्टी

पुणे में उनका प्रतिष्ठित आवास Lincoln House सहित कई ऐतिहासिक संपत्तियां उनके स्वामित्व में हैं. उन्होंने रियल एस्टेट और प्रीमियम आवासीय परियोजनाओं में भी निवेश किया है.

- विरासत संपत्तियां
- प्रीमियम आवासीय
- रियल एस्टेट निवेश

बायोटेक और फार्मा विस्तार

साइरस पूनावाला ने बायोटेक्नोलॉजी और फार्मास्यूटिकल्स के क्षेत्र में निरंतर निवेश किया है, जिससे भारत की स्वास्थ्य अवसंरचना मजबूत हुई है.

- बायोटेक नवाचार
- फार्मा रिसर्च
- स्वास्थ्य सेवा

स्वास्थ, वित्त और नवाचार के माध्यम से - एक सशक्त, आत्मनिर्भर भारत की ओर..

सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के संस्थापक डॉ. साइरस पूनावाला को २६ जून, २०१९ को एनकेनिया समारोह में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा **'डॉक्टर ऑफ साइंस'** (D.Sc.) की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया. वैश्विक स्वास्थ्य और वैक्सीन निर्माण के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए उन्हें यह सम्मान दिया गया. इसके साथ ही वे १८१३ में एडवर्ड जेनर के बाद यह विशिष्ट सम्मान प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति बन गए.

विशाल परोपकारी कार्य

साइरस पूनावाला केवल एक विश्वस्तरीय उद्योगपति नहीं बल्कि एक उदार परोपकारी व्यक्तित्व भी हैं. स्वास्थ्य से लेकर शिक्षा और सामाजिक कार्यों का उनका दायरा काफी विशाल है. उन्होंने अस्पतालों, चिकित्सा अनुसंधान और टीकाकरण कार्यक्रमों में व्यापक सहायता प्रदान की है. पुणे और अन्य शहरों में कई स्वास्थ्य परियोजनाओं को फंडिंग की है.

इसके अलावा उन्होंने पुणे के शैक्षणिक संस्थानों को दान दिया और बुनियादी ढांचे के विकास में योगदान दिया है. BMCC और अन्य कॉलेजों में उनके नाम से भवन और सभागार स्थापित किए गए हैं. कोविड-१९ महामारी के दौरान उन्होंने बड़े पैमाने पर आर्थिक सहायता प्रदान की. महाराष्ट्र सरकार और केंद्र सरकार के राहत कोष में भारी योगदान दिया.

घुड़दौड़ के प्रति उनके प्रेम ने भारतीय रेसिंग उद्योग को भी मजबूत किया. वे रॉयल वेस्टर्न इंडिया टर्फ क्लब से जुड़े रहे हैं और घुड़दौड़ को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में योगदान दिया.

विभिन्न पुरस्कार और सम्मान

परोपकारी उद्योगपति साइरस पूनावाला को उनके सामाजिक कार्य में असीम योगदान के लिए कई सारे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. इसमें भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला पद्मभूषण तथा पद्मश्री सबसे प्रमुख है. उन्हें वर्ष २००५ में पद्मश्री तथा वर्ष २०१६ में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया.

इसके साथ ही विभिन्न उद्योग एवं स्वास्थ्य संगठनों द्वारा उन्हें लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से नवाजा गया है.

कार्य का वैश्विक प्रभाव

सीरम इंस्टीट्यूट के माध्यम से साइरस पूनावाला ने वैश्विक टीकाकरण कार्यक्रमों में निर्णायक भूमिका निभाई. WHO के Expanded Programme on Immunization (EPI) में उनके टीकों की भागीदारी काफी महत्वपूर्ण रही है. भारत को 'फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड' बनाने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है.

पुणे और महाराष्ट्र पर विशेष प्रभाव

आप पुणे में रहते हैं इसलिए यह उल्लेखनीय है कि साइरस पूनावाला ने पुणे को वैश्विक बायोटेक हब के रूप में स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई. उनकी कंपनी ने हजारों लोगों को रोजगार दिया और शहर की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया है. पुणे की पहचान आज केवल शिक्षा नगरी ही नहीं, बल्कि वैक्सीन निर्माण के वैश्विक केंद्र के रूप में भी होती है–जिसका श्रेय काफी हद तक पूनावाला को जाता है.

साइरस पूनावाला का जीवन केवल एक उद्योगपति की सफलता की कहानी नहीं है, बल्कि यह दूरदृष्टि, नवाचार और सामाजिक जिम्मेदारी का एक अनोखा और अद्‌भुत उदाहरण है. उन्होंने एक छोटे से पारिवारिक घोड़ा फार्म से शुरुआत कर विश्व की सबसे बड़ी वैक्सीन कंपनी का साम्राज्य तैयार किया. उनके प्रयासों से करोड़ों लोगों का जीवन सुरक्षित हुआ है. व्यवसाय में उत्कृष्टता और समाज के प्रति प्रतिबद्धता–इन दोनों का संतुलन साइरस पूनावाला को एक विशिष्ट व्यक्तित्व बनाता है. आज वे न केवल भारत के धनी उद्योगपतियों में गिने जाते हैं, बल्कि वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य के संरक्षक के रूप में भी सम्मानित हैं. उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि जब उद्योग और मानवता साथ चलते हैं, तो परिवर्तन वैश्विक स्तर पर संभव होता है. उनके सभी महान कार्यों को देखा जाए तो वे केवल महाराष्ट्र ही नहीं बल्कि विश्व के गौरव भी कहलाए जाएं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी.

◆ ◆ ◆

महाराष्ट्र के गौरव

संघर्ष और सफलता की दास्तान

डॉ. बी. आर. आम्बेडकर

डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर भारतीय संविधान के निर्माता और दलितों के मसीहा के रूप में जाने जाते हैं. उन्होंने समानता, शिक्षा और मानवाधिकार के लिए जीवनभर संघर्ष किया.

शिक्षित बनो,

संगठित रहो,

संघर्ष करो,

का नारा दिया. कोलंबिया और लंदन से डॉक्टरेट की उपाधि पाकर वे उस समय के सबसे विद्वान नेताओं में से एक बने. 14 अप्रैल 1891 को जन्मे बाबासाहेब ने सामाजिक न्याय की नींव रखी.

'शिक्षा शेरनी का दूध है,

जो पीएगा, वही दहाड़ेगा'

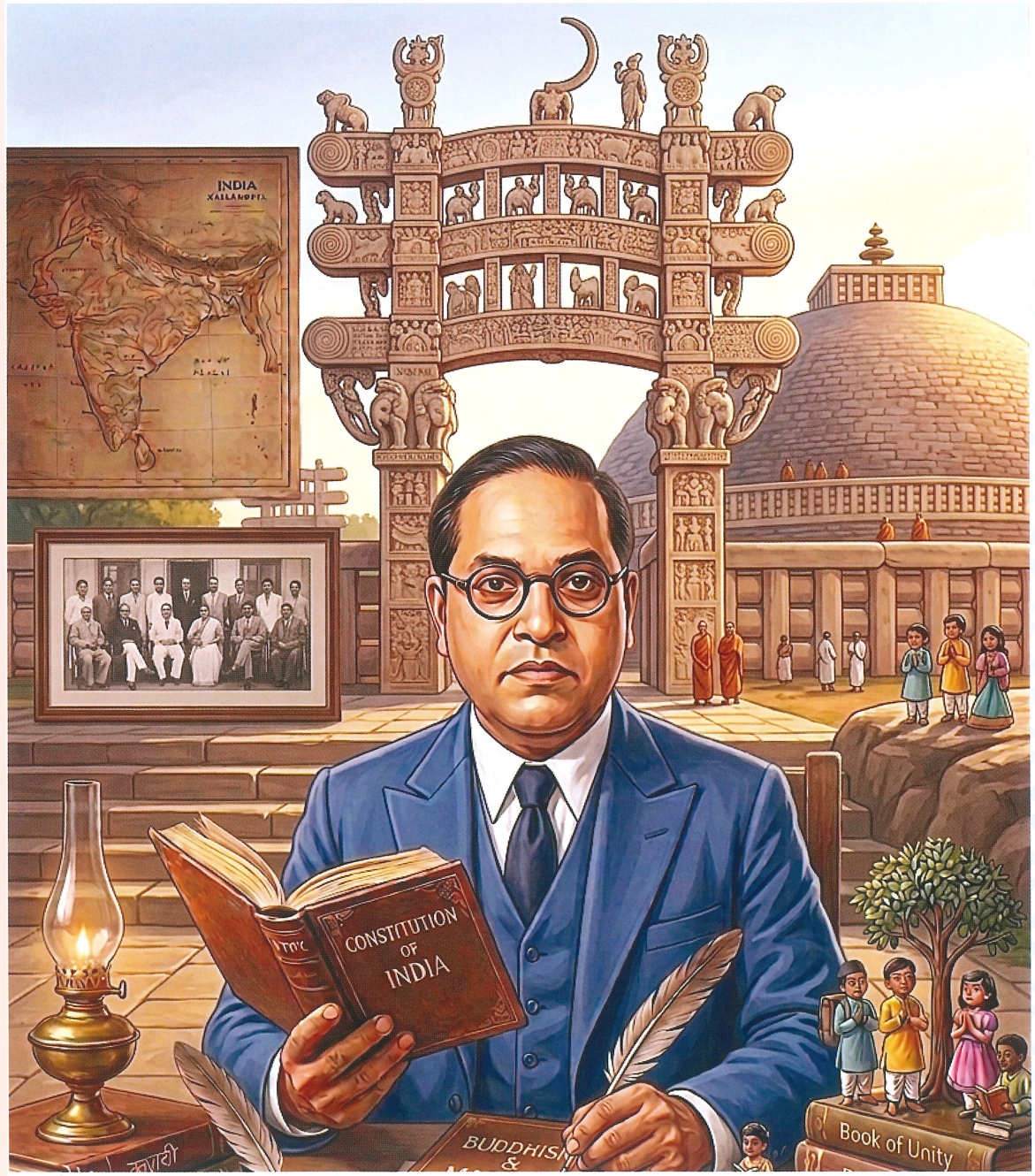

महाराष्ट्र के गौरव
संघर्ष और सफलता की दास्तान

महात्मा ज्योतिबा फुले

महात्मा ज्योतिबा फुले 19वी सदी के महान समाज सुधारक थे जिन्होंने शिक्षा और समानता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया. उन्होंने 1848 में अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के साथ मिल कर भारत की पहली बालिका विद्यालय की स्थापना की. उन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना कर जातिगत भेदभाव और अंधविश्वास के खिलाफ आवाज उठाई. गुलामगिरी जैसी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने शोषितों को जागरूक किया, इसलिए उन्हें महात्मा की उपाधि मिली.

शिक्षा उसे कहते हैं, जो सही को सही और गलत को गलत कहने की क्षमता को विकसित करता है.

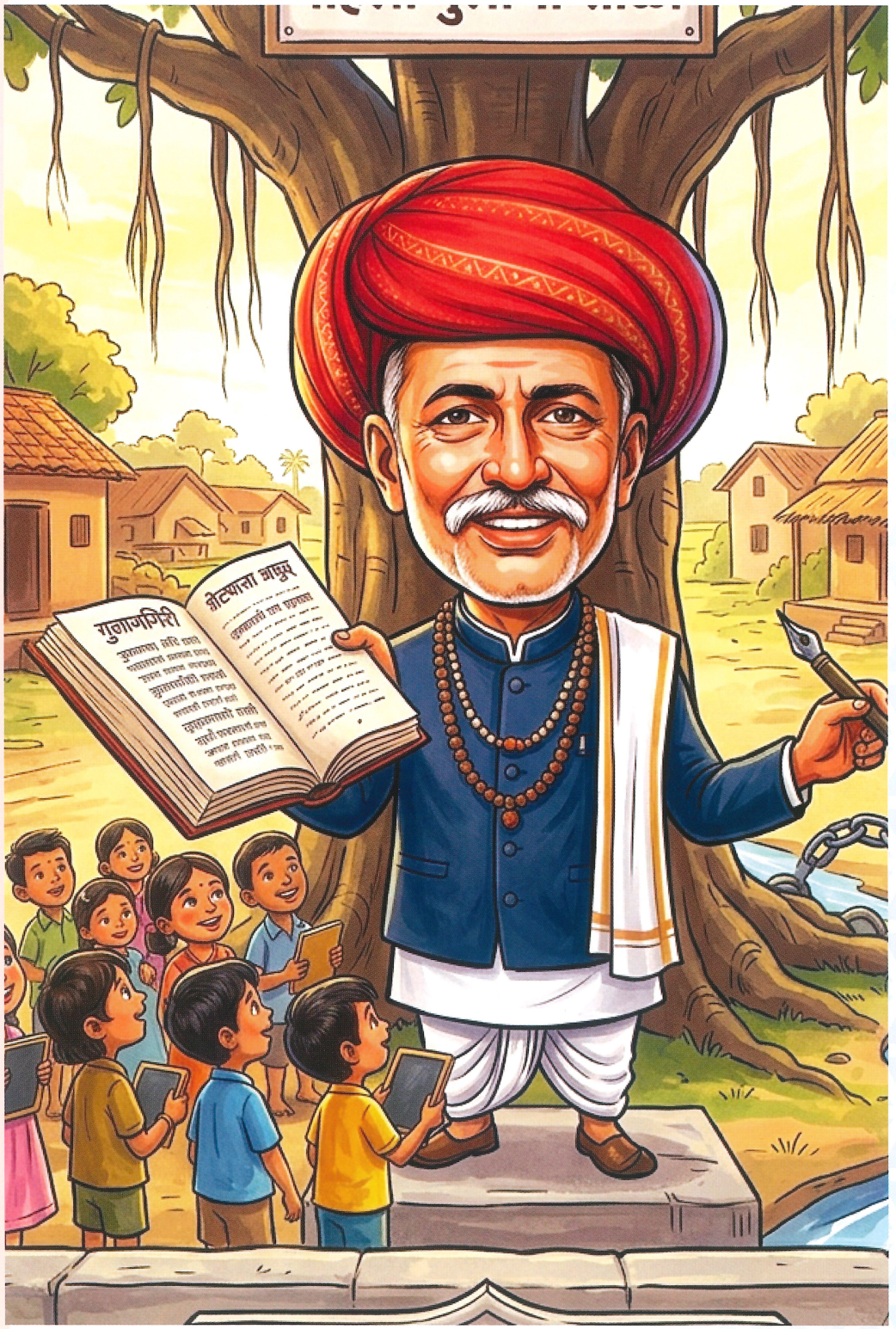

महाराष्ट्र के गौरव

संघर्ष और सफलता की दास्तान

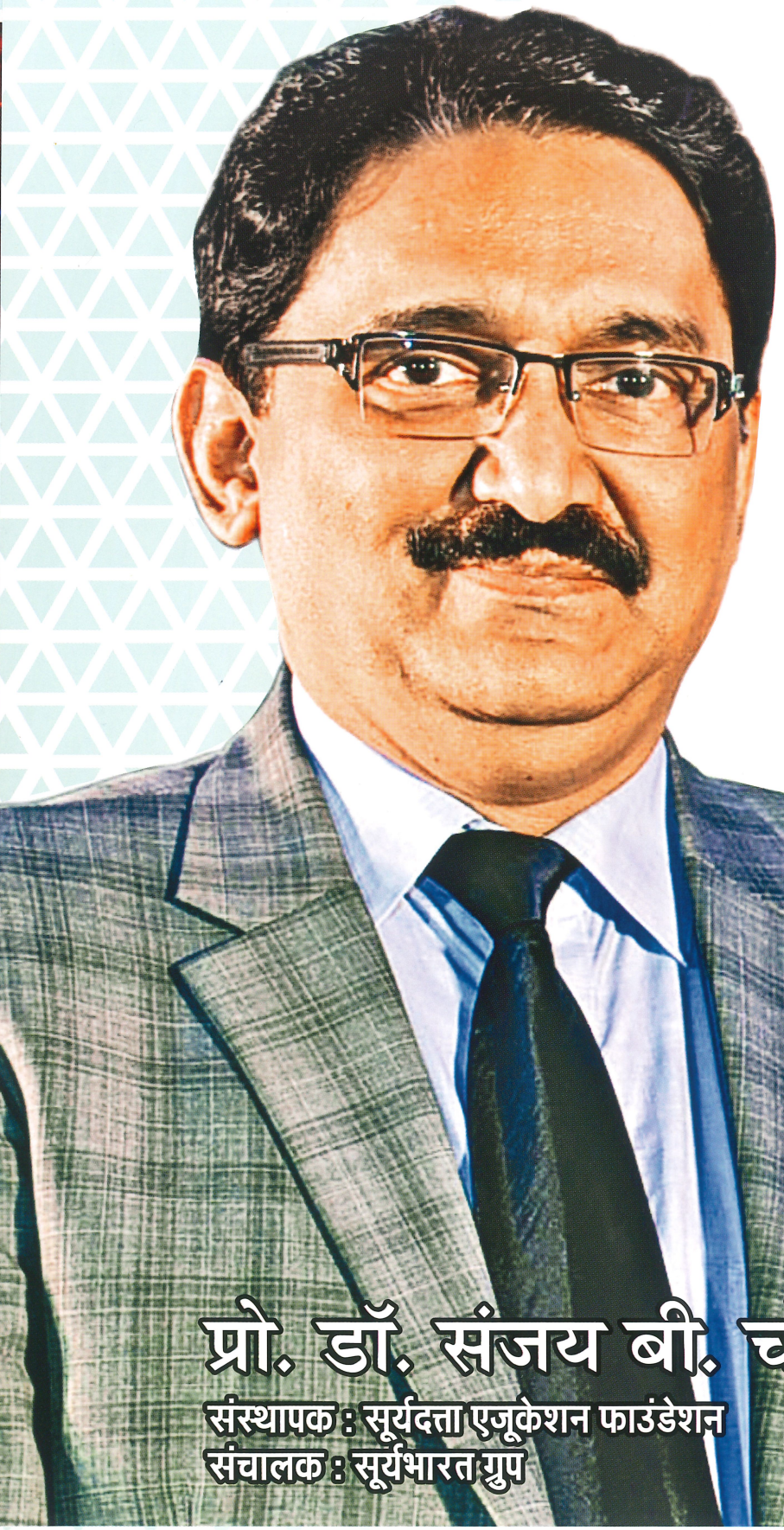

प्रो. डॉ. संजय बी. चोरडिया

संस्थापक : सूर्यदत्ता एजूकेशन फाउंडेशन
संचालक : सूर्यभारत ग्रुप

श्रीमती सुषमा सं. चोरडिया

उपाध्यक्ष : सूर्यदत्ता एजूकेशन फाउंडेशन
संचालक : सूर्यभारत ग्रुप

नवोन्मेषी और शोधपरक शिक्षा के ध्वजवाहक

"शिक्षा के साथ राष्ट्र सशक्तिकरण और सभी तक शिक्षा पहुंचाना ही हमारा ध्येय"

शिक्षा वह माध्यम है जो सपनों को साकार कर सकती है. शिक्षा वह आईना है जो आपकी असाधारण प्रतिभा को संवारती है, शिक्षा हमें वह पंख देती है जो हमें ऊचाइंयों तक उड़ने की क्षमता देती है. शिक्षा का यह महत्त्व पहचानते हुए इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्य किया है सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूट, पुणे और उसके चेयरमैन शिक्षाविद् और अत्याधुनिक तकनीक तथा नैतिक मूल्य से जोड़ने का निरंतर प्रयास करने वाले प्रो. डॉ. संजय बन्सीलाल चोरडिया. 'समय सबसे बडा शिक्षक है और हर अनुभव कुछ सिखाता है', ऐसा मानने वाले प्रो. डॉ. संजय चोरडिया ने छात्रों के शैक्षणिक, बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, भाषिक और भावनिक विकास पर अतुलनीय कार्य किया है.

भारतीय शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन करने की बातें तो अक्सर होती रहती है. इस पर काफी डिबेट भी होती है. कई सारी संस्थाओं ने परिवर्तन लाने की दिशा में कार्य भी हो रहे हैं, जिनमें गिने-चुने संस्थान शामिल हैं. इनमें आज एक प्रमुख नाम है पुणे का सूर्यदत्त ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स.

सूर्यदत्त ग्रुप इंस्टीट्यूट्स द्वारा आयोजित सूर्यदत्त राष्ट्रीय जीवन गौरव पुरस्कार समारोह २०२६ में पूर्व मुख्य न्यायाधीश उदय ललित, वरिष्ठ अभिनेता अशोक सराफ, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एस. कृष्णमूर्ति, सूर्यदत्त के संस्थापक अध्यक्ष प्रो.डॉ. संजय बी. चोरडिया, उपाध्यक्ष सुषमा चोरडिया, सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति.

माननीय केंद्रीय वित्त मंत्री Nirmala Sitharaman को सूर्यदत्ता एजुकेशन फाउंडेशन, पुणे द्वारा "सूर्यभूषण राष्ट्रीय पुरस्कार-२०२२" से सम्मानित किया गया.

प्रारंभिक शिक्षा और जीवन

पीने को हर बार प्यास चाहिए, उड़णे को हर बार नया आकाश चाहिए
अतीत के स्मृति में कभी जिया नहीं जाता, जीते को हर बार हर क्षेत्र में आत्मविश्वास चाहिए

यही कहानी है प्रा डॉ. संजय बी. चोरडिया की.

डॉ. चोरडिया का जन्म पुणे में एक सामान्य परिवार में हुआ. बचपन से ही उनके मन में शिक्षा के प्रति एक अनोखी ललक पिता बन्सीलाल जी एवं माता रतनबाई ने देखी थी. प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के दौरान उनके प्रतिभा की चमक दिखाई दी.

बारहवीं के पश्चात कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग पुणे में उन्होंने एडमिशन लिया. यहां उन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में अपनी स्नातक की डिग्री हासिल की. ज्ञान की जबरदस्त चाहत और कड़ी निष्ठा ने उनकी आगे राह निश्चित की. उन्होंने मार्केटिंग, मानव संसाधन, उत्पादन, सामग्री प्रबंधन तथा वित्त में मास्टर डिग्री प्राप्त की तथा तत्पश्चर्या पर्यावरण विज्ञान में पीएचडी प्राप्त करते हुए अपनी शिक्षा यात्रा को नई ऊंचाइयां प्रदान की. शिक्षा पूरी करने के बाद डॉ. चोरडिया ने बजाज टेम्पो लिमिटेड (अब फोर्स मोटर्स लिमिटेड) में अपनी सेवा शुरू की. उनकी प्रतिभा के चलते कंपनी में उनका कद जल्द ही काफी ऊंचा हो गया. वहां काफी कम समय में वे जनरल मैनेजर के पद तक पहुंचे.

स्टार्टअप कल्चर को बढ़ावा

युवा एवं उद्यमी बनने की इच्छा रखने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए एआईएमए बिज लैब, इनोवेशन नेक्स्ट लैब, एआई लैब के रूप में सेंटर्स ऑफ एक्सीलेंस स्थापित किए गए हैं, जो कैम्पस में स्टार्टअप कल्चर को बढ़ावा देते हैं. छात्रों को नॉलेज, सीरीज ऑफ लेक्चर्स तथा प्रोजेक्ट के जरिए स्टार्टअप के लिए प्रोत्साहित किया जाता है. छात्रों को उद्यमी बनने के लिए जरूरी इनपुट प्रदान किए जाते हैं. एसजीआई के कई छात्रों ने या तो खुद का व्यवसाय शुरू किया है, अथवा परिवार के व्यवसाय को आगे बढ़ा रहे हैं.

एसजीआई का अत्याधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर जिसमें मॉडर्न सेमिनार हॉल, कम्प्युटर लैब, मल्टी एक्टिविटी हाल, ऑडिटोरियम, सुसज्जित लाइब्रेरी, जिमनाजियम, ग्रीन कैम्पस की सुविधाएं शामिल हैं.

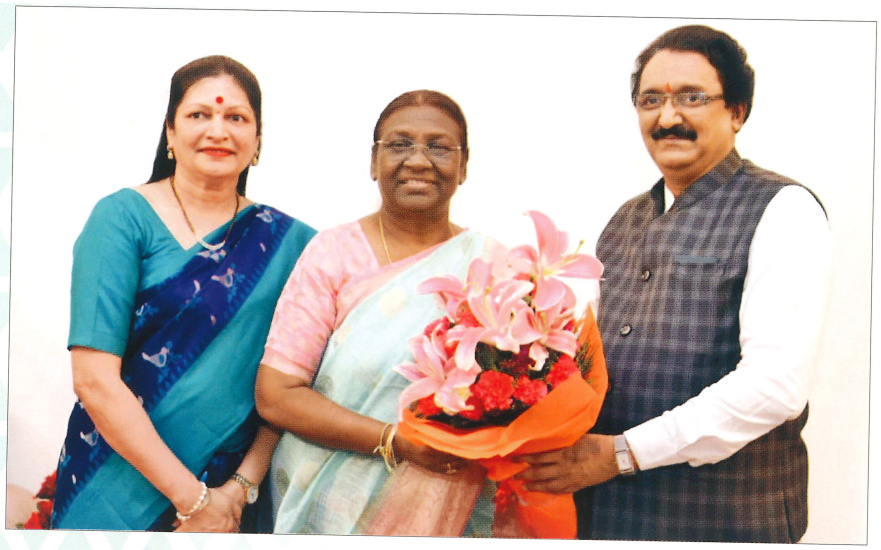

भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मूजी को बधाई देते प्रोफेसर डॉ. संजय बी चोरडिया, एवं श्रीमती सुषमा सं. चोरडिया, सम्मान और गौरव का एक यादगार क्षण.

शिक्षा, सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन के प्रति प्रतिबद्धता हेतु "CSR Heroes २०२५" सम्मान प्राप्त करने का गौरवपूर्ण क्षण, जो तत्कालीन महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल श्री सी. पी. राधाकृष्णन, जो वर्तमान में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति हैं, के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया.

कॉरपोरेट क्षेत्र में उनकी विचार शक्ति, दूरदर्शी सोच, रणनीतिक कौशल तथा बेजोड़ परिचालन की विशेषज्ञता उभरकर सामने आई. यह सब कार्य करते हुए भी डॉ. चोरडिया का शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के प्रति रुझान काफी बढ़ रहा था.

ऐसे में उन्होंने १९९९ में नौकरी छोड़कर शिक्षा क्षेत्र में कदम रखा और उनका यह कदम आगे चलकर पुणे के शिक्षा क्षेत्र के लिए काफी अहम साबित हुआ. कहते है,

'मुसिबते लाख आए उनकी श्रद्धा कम नहीं होती,
सोने के टुकड़े करो हजार, उन की कींमत कम नहीं होती

सूर्यदत्ता एजुकेशन फाउंडेशन की रखी नींव

वर्ष 1999 में शैक्षिक उत्कृष्टता का एक आदर्श स्थापित करने की अटूट इच्छा से प्रेरित होकर डॉ. संजय चोरडिया ने अपने माता पिता के आशीर्वाद से 'सूर्यदत्ता एजुकेशन फाउंडेशन' की स्थापना की. उनका यह कदम एक काफी दूरदर्शी पहल थी. उन्होंने शिक्षा का जो पौधा लगाया आगे चलकर उसका 'सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशन्स' के रूप में शिक्षा का वटवृक्ष बन गया. आज 'सूर्यदत्ता' केवल एक शिक्षा संस्थान तक सीमित नहीं, बल्कि छात्रों के सर्वंकष प्रतिभा विकसन तथा ज्ञान दीप के प्रज्वलन का प्रमुख केंद्र बन गया है. आज 'सूर्यदत्ता' के कैंपस में विभिन्न तरह की शिक्षा प्रदान करने वाले कॉलेज स्थापित है. यहां केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि शिक्षा के साथ-साथ अत्याधुनिक तकनीक, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व का सहज मेल साधा जाता है और एक समग्र और भविष्य के लिए छात्रों को तैयार किया जाता है. केजी से लेकर पीजी तक उच्च कोटि की शिक्षा प्रदान करने के चलते इस शिक्षा संस्थान में ऐसे स्नातक तैयार होते हैं जो न केवल अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं, बल्कि इस

आईएमसी रामकृष्ण बजाज राष्ट्रीय गुणवत्ता पुरस्कार २०२५, ३० अप्रैल २०२६ को आईएमसी के प्रबंध न्यासी सदस्य की गरिमामयी उपस्थिति में श्री सुनील गावस्कर के हाथों प्राप्त किया.

सूर्यदत्ता राष्ट्रीय पुरस्कार" समारोह

सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स द्वारा आयोजित "सूर्यदत्ता राष्ट्रीय पुरस्कार" समारोह में विश्व एवं देश भर से विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले मान्यवरों को सम्मानित किया जाता है. शिक्षा, सामाजिक कार्य, उद्योग, कला, संस्कृति एवं अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों का गौरव किया जाता है.

कुछ मुख्य पुरस्कार विजेता इस प्रकार हैं –

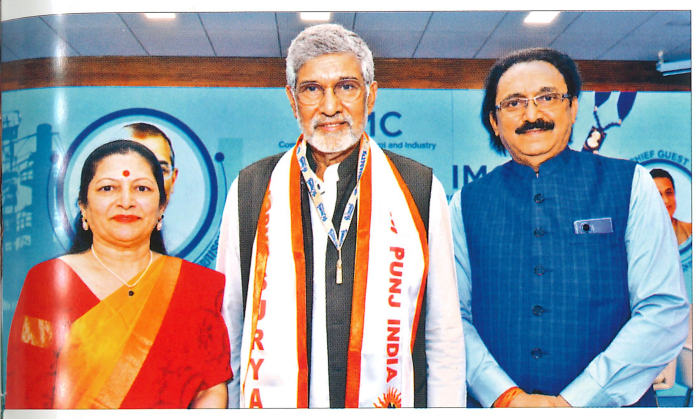

३० अप्रैल २०२६ को मुंबई स्थित आईएमसी में आयोजित 'आईएमसी रामकृष्ण बजाज राष्ट्रीय गुणवत्ता पुरस्कार २०२५' कार्यक्रम के दौरान नोबेल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी जी के साथ प्रेरणादायी संवाद एवं सम्मान.

निरंतर बदलते हुए विश्व में ईमानदारी, करुणा और नेतृत्व जैसे मूल्यों को भी अपने जीवन में आत्मसात करते हैं. आज सूर्यदत्त में कुल २५ कॉलेज ज्ञानदान का कार्य कर रहे है. यह सभी कॉलेज सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ, MUHS, DBATU, KKSU, CBSE, MSBTE से संलग्नित हैं. इसके अलावा AICTE, PCI, BCI और विभिन्न काउंसिल की ओर से मान्यता प्राप्त है. नैक का रेटिंग मान्यता संस्था के उच्च क्वालिटी का प्रमाण है.

बौद्धिक और कर्तृत्व की मिसाल

जैसे पानी की हर बूंद में महासागर बनने की शक्ति होती है और बीज के हर अंश में वटवृक्ष बनने की क्षमता होती है वैसे ही सूर्यदत्ता ग्रूप ऑफ इन्स्टिट्यूट्स के हर संस्थान में कुछ कर दिखाने की खासियत है. प्रतिभाउन्मेषि डॉ. संजय चोरडिया ने एक ओर शिक्षा प्रदान करने का कार्य जारी रखा, वहीं दूसरी ओर उनकी बौद्धिकता और शिक्षा को अनोखे तरीके से मोड़ने के कार्य को देखते हुए उन्हें कई सारे सम्मान भी प्राप्त हुए. उन्हें हैती के थियोफनी विश्वविद्यालय द्वारा मानद D.Litt. से सम्मानित किया गया; यह एक ऐसी उपलब्धि है जो उनके दूरगामी प्रतिभा और प्रभाव को रेखांकित करती है.

उन्होंने हार्वर्ड, MIT, स्टैनफोर्ड और पेरिस विश्वविद्यालय जैसे विश्व-प्रसिद्ध संस्थानों में प्रतिष्ठित नेतृत्व कार्यक्रमों में भाग लिया है. इज़राइल, रूस, मलेशिया, थाईलैंड, सिंगापुर और जापान के विश्वविद्यालयों की यात्राओं से उनका वैश्विक दृष्टिकोण और भी व्यापक हुआ है. शिक्षा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने के चलते डॉ. चोरडिया वैश्विक शिक्षा संस्थानों के कई प्रभावशाली बोर्डों में विशिष्ट पदों पर आसीन हैं. जबकि USA के 'ग्लोबल चैंबर' के लिए 'विश्वविद्यालय-उद्योग भागीदारी कार्यक्रम' के अध्यक्ष और दिल्ली स्थित CEGR के वरिष्ठ उपाध्यक्ष जैसे कई प्रतिष्ठित पदों पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं. ये प्रतिष्ठित संबद्धताएं शैक्षणिक नीतियों को आकार देने, उद्योग और शिक्षा जगत के बीच मजबूत साझेदारियों को बढ़ावा देने, और विश्व भर में शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के उद्देश्य को आगे बढ़ाने में उनके प्रभाव को रेखांकित करती हैं.

पुरस्कार ही हैं अच्छे कार्य का विश्लेषण

डॉ. संजय चोरडिया का एक विचार रहा है रुको मत, चलते रहो. बुझो मत जलते रहो.' दुनिया में कितनी भी मुश्किलें आती है उस का सामना जिद्दी बन करते रहो. 'सूर्यदत्त' के माध्यम से डॉ. संजय बी. चोरडिया ने शिक्षा क्षेत्र को आधुनिक तकनीक तथा नैतिक मूल्यों से जोड़ने के कार्य के चलते उनका आज तक विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थाएं तथा मंचों पर सम्मान किया गया है. इसमें प्रमुख है वर्ष 2024 में भारत भाग्य निर्माता पुरस्कार, अटल इंटरनेशनल अवॉर्ड, वर्ष 2022 में लंदन का प्रतिष्ठित पुरस्कार एशियन-यूके एक्सिलेंस अवॉर्ड, इंडियन अचिवर्स अवॉर्ड इन पुरस्कारों का समावेश है. इसके साथ ही महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का सदस्यता उन्हें दिया गया है. डॉ. चोरडिया दिल्ली के सेंटर फॉर एजुकेशन एंड रिसर्च के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के तौर पर चुने गए. वे यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ के योजना बोर्ड पर २०२१-२०२४ तक कार्यरत थे. साईधाम कैंसर स्पेशालिटी हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के ट्रस्टी तथा अमेरिका स्थित ग्लोबल चेंबर में भी वे इस समय कार्यरत है.

'जीवन का आधार है शिक्षा, खुशहाली का भंडार है शिक्षा,
जीवन में नई ज्योत जगती, सपने पुरा कर देती हैं'
सूर्यदत्ता ग्रूप ऑफ इन्स्टिट्यूट्स की शिक्षा

◆ ◆ ◆

"पूर्णवाद महोत्सव 2022" के दौरान परम पूज्य डॉ. श्री विष्णु महाराज पारनेरकर जी के हाथों प्रो. डॉ. संजय बी. चोरडिया को "प्रज्ञावंत पुरस्कार" से सम्मानित किया गया.

सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूट, पुणे ने शैक्षणिक सहयोग एवं अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु एशियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी (AIT), थाईलैंड के साथ सामंजस्य करार (MOU) पर हस्ताक्षर किए.

सीएसआर के अंतर्गत सूर्यदत्त एज्युकेशन फाउंडेशन द्वारा विभिन्न तालुकों के जरूरतमंद विद्यार्थियों को साइकिलों का वितरण किया गया.